रेतघड़ी

शिक्षा विभाग राजस्थान के सृजनशील
काव्य-सर्जकों का कविता संकलन

रेतघड़ी

शिक्षा विभाग
राजस्थान के लिए

दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152 चौड़ा रास्ता जयपुर
द्वारा प्रकाशित

रेतघड़ी

सपादक

मंगलेश डबराल

रेतघड़ी

☆ प्रकाशक — *शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए*
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152 चौड़ा रास्ता जयपुर 302003
दूरभाष 72455/74087

☆ मूल्य — 33 50

☆ सस्करण — शिक्षक दिवस 1992

☆ आवरण — करुणानिधान

☆ लेजर कम्पोजिंग — अमरज्योति कम्प्यूटर्स
त्रिपोलिया बाजार जयपुर

☆ मुद्रक — एस एन प्रिटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आमुख

रचना का जगत वास्तविक-जगत का अग होते हुए भी इससे पृथक निराला और समानान्तर होता है । रचना मे अनुभव का एक नया ससार सामने आता है और उन क्षणो को अद्वितीय बना देता है जिनमे रचना हो रही होती है । शब्दो की इस काया मे रक्त, रस, माँस और अस्थियाँ सब शब्दो मे ही समाई रहती है । शब्द से इतर कुछ न होकर भी बहुत कुछ होता है इनमे यानी परिवेश परिस्थितियो और समय के बदलाव के साथ अर्थ की गहरी, अनसोची और नई से नई परते खुलने की सभावना बराबर बनी रहती है । जब लेखक की रचनात्मक सवेदना पाठक को भी उसी स्तर पर झकझोरने लगे और सवेदना के स्तर पर दोनो एकमेक हो जाएँ तो समझा जाना चाहिए कि रचना अपनी अर्थवत्ता को सिद्ध कर रही है ।

रचना के नाम पर लिखी जाने वाली सैकड़ो हजारो रचनाओं' मे से विरली ही समय की कसौटी पर खरी उतरती है । शेष या तो शब्दो की कसरत भर बनी रहती है या किसी अमर कृति के लिए उर्वरा जमीन तैयार करने मे खाद बनकर रह जाती है । अमर होने के लिए किसी कृति को समर्थ रचनाकार की साधना उसकी अनुभूति की गहराई और प्रामाणिकता, प्रस्तुति का कौशल और सवेदनात्मक आवेगो की पकड़ से जुड़ा होना आवश्यक है । इसीलिए कहते है कि रचना के क्षण विरले भी होते हैं और निराले भी ।

राजस्थान के सृजनशील शिक्षक साहित्यकार इन विरले और निराले क्षणो की पकड़ करने का प्रयास करते रहे है । इनमे से कुछेक शब्द शिल्पी एवम् कृतिकार ऐसे हैं जिन्हे देशव्यापी प्रतिष्ठा मिली है । इन लोगो ने शिक्षा विभाग के भी गौरव को बढ़ाया है । हमारे लिए रचना का यह ससार एक परम्परा है – आज से नही सन् 1967 से, जब हमने इस परिक्रमा को शुरू किया था ।

पूरे पच्चीस वर्षों की यानी एक चौथाई शताब्दी की साधना हमारे साथ है । इस रजत-जयन्ती की सज्ञा से विभूषित करें न करें – यह बेमानी है लेकिन इतना सत्य अवश्य है कि पूरे देश के शिक्षा विभागो मे केवल राजस्थान का शिक्षा विभाग ही इस प्रकार के अनुष्ठान को चला रहा है । देश भर के चर्चित साहित्यकारो समीक्षको और राजनेताओं ने इस तथ्य को स्वीकार किया है – उनकी यह मान्यता ही हमारी असली ताकत है ।

रचना की इस अविरल श्रृखला मे अब तक कुल 123 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है और इस वर्ष की 6 पुस्तको को मिलाकर यह सख्या 129 तक पहुच

जाएगी । सख्या के गौरव स कहीं अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन पुस्तका का सम्पादन देश के सुप्रसिद्ध चर्चित और सर्वमान्य साहित्यकार करते रह है । शिक्षा विभाग उन सबके प्रति आभारी है । इस वष प्रकाशित होने वाली पुस्तका क नाम इस प्रकार ह

1 रेतघड़ी (कविता सकलन)	स मगलेश डबराल
2 रातो जगी कथाएँ (कहानी सकलन)	स पद्मा सचदेव
3 प्रतिभा के पख (हिन्दी विविधा)	स क्षेमचद्र सुमन
4 आखर बेल (राजस्थानी विविधा)	स ओंकार श्री
5 शिक्षा समस्याए तथा सभावनाए (शिक्षा साहित्य)	स राजन्द्र पाल सिह
6 बादल और पतग (बाल साहित्य)	स राजेन्द्र उपाध्याय

इस वर्ष हमने एक नया निर्णय लिया है । शिक्षक हो अथवा कर्मचारी - शिक्षा विभाग की कार्मिक सरचना म दोनो का हाथ है अत इस वष क सकलना म आपको सृजनशील शिक्षको और कर्मचारियो दोना की रचनाओं का लाभ मिलेगा ।

मुझे एक बात अपने रचनाकारा म कहनी हे । यह सही है कि लब्ध प्रतिष्ठ सम्पादको ने कुछ रचनाओं अथवा रचना अशो की सराहना की है तो कई जगह कमियाँ भी बताई हैं । सराहना जहाँ हम सुख दती हे वहाँ कमिया सुधार के अवसर प्रदान करती हे । साहित्य की रचना करना भी एक शिक्षा कर्म है । साहित्य और शिक्षा को अलग थलग नही किया जा सकता । दोनो का काम लोकमानस को परिष्कृत ओर सस्कारित करना है । दोनो सत्य पथ के सहभागी ह । दोना एक ऐसा इसान गढ़ना चाहते हे जो इन्सानियत की सही और सार्थक पहचान द सके ।

जिन लोगो की रचनाओं का इन सकलनो मे समावेश है मै उन्हे बधाई देता हू । जिनकी रचनाएँ नही छप पाई हैं उनस मेरा आग्रह है कि रचनाधारा से लगातार जुड़े रहे, लेखनी के पैनेपन का बनाये रखे ओर आगामी वर्ष के सकलना के लिए अपनी श्रेष्ठतम और नवीनतम रचनाएँ द । मै इस वर्ष के सम्पादको और प्रकाशक बधुओं का हृदय स आभारी हू जिन्होंने कम समय म उत्कृष्ट सम्पादन एवम् प्रकाशन द्वारा विभाग के इस अनुष्ठान को सफल बनाने म सहयोग दिया हे ।

शिक्षक दिवस 1992

मनोहर लाल रतोड़िया निदेशक,
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर

भूमिका

पोलेड के विश्वप्रसिद्ध कवि ज्बिग्न्यू हर्बर्त एक जगह लिखते है कि मूल रूप म कविता का एक धुधला सा खाका काफी देर तक हवा मे तैरता रहता है और फिर कोई कवि साहस के साथ उसे जमीन पर उतार कर एसा आकार देता है कि वह मनुष्य की समझ म आ सके । कविता के बारे मे य" कोई आध्यात्मिक' किस्म का कथन नही है न इसमे उस 'रहस्यात्मक' या 'जादुई ब ाने का आग्रह है । हर्बर्त का आशय यह बतलाना है कि कविता ऐसी कोई र्नभ अज्ञात या अलौकिक चीज नही है जिसे खोजने के लिए खूब खाक छान्नी पड़े, अनदेखी-अनजान जगहो मे जाना पड़े या कोई तपस्या करनी पड़े जिसके अत मे कविता एक दिव्य बोध की तरह अपने आप प्राप्त हो जाये । कविता हमेशा उपस्थित है । वह कही भी हो सकती है हमारे जीवन मे, चीजो, स्थितिया और घटनाओं मे वह आकारहीन ढग से मौजूद है और यह हमारी सवेदनशीलता और रचनात्मक जोखिम पर निर्भर है कि हम उसे किस तरह पहचानते ह आर कैसा रूप और आकार दते ह ।

कविता के बारे मे सबसे अच्छी बात श ायद यही है कि वह ऐसी कोई विशिष्ट चीज नही है जिसे पाने के लिए हमे अपने जीवन से दूर और अलग कही जाना पड़े। यह धारणा एक बड़ी हद तक व्याप्त रही है कि काव्य रचना एक तरह की साधना है और कविता एक दूसरी ही तरह की शक्ति है जो विरलो मे पायी जाती है। पर अगर हम कविता के इतिहास की देखे तो पायेगे कि अपने-अपने दौर मे बड़ी कविता उन्ही लोगो ने लिखी है जो कविता को जीवन के बीच खोजते रहे । कबीर मीरा निराला मुक्तिबोध आदि कवियो म समय और सवेदना का बहुत अतराल है पर अगर कबीर और मीरा की कविता हम आज भी विचलित कर देती है ओर इतनी पुरानी होने के बावजूद आधुनिक और आवश्यक लगती है तो इसलिए कि उन्होने कविता को जीवन से दूर और अलग नही माना ओर वे उस कविता को साहस के साथ धरती पर उतार लाये जो एक धुधली शक्ल मे हवा म तैर रही थी ।' अच्छी कविता की परपरा भी समाज म इसी तरह बनती रही कि जिस कवि मे ऐसा करने का ज्यादा रचनात्मक साहस था उसकी कविता अपने समय को लाघती हुई हर आने वाले दौर तक जाकर नयी और समकालीन होती चली गयी । कबीर और मीरा ने जिस दौर म लिखा उसका सामाजिक, नैतिक और मानसिक यथार्थ आज बिल्कुल बदल गया है पर उनकी कविता आज भी समकालीन बनी हुई है ।

शायद कविता की असाधारणता यही है कि वह बहुत साधारण चीजो मे सभव होती है। वह हमारी मामूली दिनचर्याओं, व्यवहारो, इन्सानी रिश्तो, रोजमर्रा के विवा मे से जन्म लेती है और इन्ही सामान्य चीजो के महत्त्व की फिर से पहचान कराती है ताकि हम फिर से अधिक सवेदनशील और अधिक मानवीय बन सके। हमारे जीवन मे कविता की भूमिका भी यही है कि वह मानवीय स्थिति और नियति की हमारी समझ को ज्यादा सघन और व्यापक और मानवीय बनाती रहे। हमारे समाज मे सत्ता सपत्ति और सस्कृति का जो भयानक तत्र मनुष्य को दबोचे हुए है और उसे अपनी नियति की रचना स्वय करने से हर समय रोकता रहता है, एक अच्छी कविता हमेशा उसके प्रतिशोध मे खड़ी होती है। वह इस प्रतिरोध मे सत्ता प्रतिष्ठान की 'असाधारण चीजो' के सामने बहुत साधारण चीजे रखती है उसकी मुखर-अमानवीयता के खिलाफ लगभग खामोश मानवीयता को स्थापित करती है और उसकी चालाकिया का सामना अपनी मासूमियत से करती है। आजादी के बाद से हिंदी म जो भी सार्थक कविता लिखी गयी है उसकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह चीखना चिल्लाना तो दूर, बोलती भी बहुत कम है पर 'कहती' बहुत कुछ है और इस कहने मे ही वह सत्ता प्रतिष्ठान से अपने बुनियादी विरोध को दर्ज कर देती है। हिंदी मे चीखती चिल्लाती कविता का भी एक दौर रहा जिमे अकविता के नाम से जाना जाता है पर जब वह आखिरकार चुप हुई तो यही पता चला कि न वह कोई सार्थक विरोध कर पायी, न उसने कविता की भाषा को समृद्ध किया और न कोई नया मानवीय अनुभव दिया। इसके बरक्स जो कविता कम शब्दो मे और अपनी धीमी आवाज़ मे जीवन के मामूली ब्यौरो या दृश्यो के साथ एक शात ढग से मनुष्य को सबोधित थी वह ज्यादा गहरी छाप छोड़ने वाली कविता थी और उसमे जीवन को बदलने की बेचैनी थी। मनुष्य को यह एहसास कराना ही अतत कविता का काम है कि 'जो हम है उससे बेहतर चाहिए।' (गजानन माधव मुक्तिबोध)

साधारण ब्यौरे और दृश्य कम शब्दो मे अधिक कहने की कोशिश और एक धीमा स्वर-शायद यही वे चीजे है जो राजस्थान के शिक्षको की कविताओं के इस सकलन को भी सार्थकता देती है। चयन के लिए करीब सात सौ से ज्यादा कविताए पाकर इन पक्तियो के लेखक को कुछ रोमाच भी हुआ और कुछ घबराहट भी लेकिन इन्हे पढ़ते हुए हमेशा यह लगता रहा कि इतने सारे शिक्षको मे अपने अनुभवो और भावनाओं को व्यक्त करने की बेचैनी है। एक ऐसे दौर मे जब अकसर यह सुनने को मिलता है कि आधुनिक कविता कोई नही पढ़ता और वह समझ मे नहीं आती कविताओं की इतनी बड़ी तादाद कही आश्वस्त करती थी कि कविता की जरूरत अब भी है उसे लिखने और पढ़ने की इच्छा अभी इतनी कम नही हुई है। मुझे लगा कि इन कविताओं मे स कई अधूरी-अपरिपक्व है, किसी मे सिर्फ मन की घुमड़न है किसी मे एक क्षणिक-सा आवेग है किसी मे एक अति परिचित विषय पर आदर्शवादी पक्तिया भर है कोई सिर्फ तुकबदी है और

किसी मे पहले लिखी जा चुकी कविताओं की गहरी छायाए है, पर ऐसी कमजोर कविताओं मे भी अकसर उन्हे लिखने वालो की बेचैनी कही न कही दिखाई देती है। यह अलग बात है कि वह बेचैनी कोई रचनात्मक आकार लेते-लेते रह गयी है और कविता के रूप मे नही ढल पायी है, लेकिन महत्त्वपूर्ण यह है कि कविता की उपस्थिति का और जीवन मे उसकी जरूरत का भी, एहसास ज्यादातर कवियो को है और अगर वे अपन अनुभवो क सच का कविता के सच म नही बदल पाये है तो इसकी भी उनकी अपनी-अपनी वजह हागी।

जो कविताए कुछ मौलिक नही कह पायीं या जो निरी तुकबदी और अभ्यास से आगे नही बढ़ सकी उन्हे छोड़ देने के बाद बची कविताए इस रेतघड़ी मे रखी गयी हैं। इस चयन म कुछ शिक्षक तो कवि के रूप मे पहले अपनी पहचान बना चुके हैं, पर ज्यादातर नाम ऐसे है जिनकी रचनाए पत्र पत्रिकाओं या किताबो मे शायद कम ही छपी है। ऐसे कवियो और कवयित्रियो को पढ़ते हुए पहला एहसास यह हुआ कि उनम अनुभवो की सचाई है और अपने समय और परिवेश क स्पदनो को महसूस करने की सवेदना है। इनकी सरलता और साधारणता अलग से ध्यान खीचती है क्योंकि उनमे जीवन के जटिल सवालो के प्रति भी एक मासूम दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण मे एक तरह की अपूर्णता भी नजर आती है लेकिन यह कोई कमजोरी नही बल्कि एक खूबी ही कही जायेगी क्योंकि इस सकलन मे शामिल कवि पेशेवर कवि नही है। अधूरापन रचनाकार को हमेशा नयी सभावनाओं और रचना के नये रास्तो की ओर ले जाता है। खास बात यह है कि इन रचनाकारों म अपने परिवेश और समय से एक सरलता भरी प्रतिबद्धता है। इसीलिए इस सकलन का नाम रेतघड़ी रखना प्रासगिक लगा।

कविता के जो बुनियादी कथ्य रहे है उनमे एक यह है कि हम अपने जीवन, अस्तित्व और नियति क सवालो का सामना कर। मालचद्र शर्मा जब कविता को 'वजूद के जीवित हिस्से मे झाकने की कोशिश' कहते है तो उसमे कही यह आत्म साक्षात्कार भी शामिल है कि हमारे अस्तित्व के कौन से हिस्से सवेदनहीन या मृत हो गये है और ऐसा क्यो है और उन्हे फिर से कैसे जिलाया जाये। उषा किरण जैन की कविता इस सवाल को एक दूसरा अर्थ देती है 'मिटे नही है अभी/हलचल के गहरे वजूद की/जो ज्वार की कुछ लहरो के रूप मे/उतर आती है श्वेत पृष्ठो पर'। मालचद्र शर्मा की कविता का अपने भीतर झाकना यानी अपनी ही चीरफाड़ करना और उषा किरण की कविता म अपने अस्तित्व आर रचनात्मकता म रिश्ता खोजना आपस मे मिलकर एक तरह से एक तस्वीर को पूरा करते हैं। ओम पुरोहित अपनी एक कविता मे कहते है कि मकान बनाने मे जिस मिटटी और इटो का इस्तेमाल हुआ वे भुला दी गयी है और अब उसमे जो आदमी रहता है उसके भीतर आदमी नही है। यह कविता सादगी के साथ उन चीजो की अहमियत का

सकेत कर जाती है जो हमारे वजूद की बुनियाद है और जिन्ह मनुष्य ने इसलिए भुला दिया है कि उसकी जड़ खुद मनुष्यता की जमीन स उखड़ गयी है। सत्यनारायण सोनी हमारे समय की इस विडबना को इस तरह कहते हैं कगूरा की जमात बढ़ रही है/नीव जमीन मे धस रही है।' सोनी भी जैसे ओम पुरोहित की कविता के अनुभव मे एक और आयाम जोड़ कर उसे पूर्ण कर देते है। बुनियाद के धसते जाने और कगूरो यानी अपनी मूलभूमि से कट कर हासिल होने वाली खोखली सफलता का रूपक हमारे दौर की कई चीजो के बारे मे सच है।

दरअसल हमारे समाज मे व्यापक स्तर पर अमानवीकरण की जो प्रक्रिया चल रही है वह इस सकलन की अनेक कविताओं का मुख्य सरोकार है। इस प्रक्रिया की गिरफ्त म आये साधारण मनुष्य को बचाने की चिता भी जगह-जगह शिद्दत के साथ उभरती है। करणीदान बारहठ का आदमी कही खो गया है' तो महेद्रसिह पूनिया की कविता मे वह आजकल मुखौटो की दूकान म जाता है और रोज एक नया मुखौटा खरीद कर लाता है।' जगदीश शर्मा की कविता इस विडबना पर हैरान है कि कबूतर चीटी शेर वैसे ही है / पर मनुष्य प्रश्नो से घिर गया है। कमर मेवाड़ी को एहसास होता है कि एक डरावने जगल के बीच फस गया हू मैं/ नही पहुचता वहा समुद्र का शोर/बादल का गर्जन/वहा सिर्फ बियाबान जगल होता है। नवनीत राय के यहा एक चुपियाया हुआ चेहरा मन की गति बता देता है और मनुष्य की सवेदना और आत्मा को भोथरा और खोखला करने वाली विभिन्न शक्तियो के विरुद्ध रमेश भारद्वाज की कविता यह कहकर एक सार्थक वक्तव्य देती है कि दीवारो के खिलाफ मनुष्य की अनवरत लड़ाई है/ न दीवार गिरती है न मनुष्य हारता है।

अपने दौर के सरोकारो की जो लगभग आश्चर्यजनक समानता इस सकलन क कई कवियो मे दिखती है वह फिर से इस बात को बतलाती है कि ज्यादातर कवि किस तरह मौजूदा सवालो से मुठभेड़ कर रहे है। इन कविताओं मे शहर आकर बूढ़े होते बच्चे है (जनकराज पारीक) 'शहर के किसी दग म जले-उजड़े घर की टूटी हुई कॉल बेल की पीड़ा है (राधेश्याम शर्मा) 'राजपथ पर ठगो लुटेरा और पिंडारियो से बचकर सुनसान जगहा से महानगर पार करता हुआ आदमी है (दशरथ कुमार शर्मा) इतने धर्मों विचारको किताबो के बावजूद मानव का उद्धार न होने की चिता है (मुख्तार टोकी) और तेज धूप के तीखे काच के टुकड़े है जो हमे अधा कर देते हैं (प्रेमप्रकाश व्यास)। इन तमाम स्थितियो के बीच निशात जैसे कवि लूट का धन मुनाफा और सत्ता पाकर खुश हुए लोगो क खिलाफ साधारण मनुष्य की उस खुशी का मार्मिक ढग से उभारते है जो उसे शाम को अपने बीवी-बच्चो के बीच आकर मिलती है। यही दरअसल वह सच्ची मानवीय खुशी है जो लूट से पैदा हुई अमानवीय खुशी के खिलाफ एक बड़ी ताकत की तरह

है और जिसे बचाना हर सवेदनशील मनुष्य की चिता है और जो कम से कम कविता म तो बची हुई है।

एक सुखद आश्चर्य यह भी है कि इस सकलन की कुछ कविताए लड़कियो और स्त्रियो के बारे मे है। स्त्रियो की हालत पर हिंदी मे काफी लिखा गया है और आधुनिक कविता के एक बड़े कवि (स्व) रघुवीर सहाय ने स्त्रियो के सवालो और उनकी नियति को लेकर जो अद्भुत कविताए लिखी है वे हमेशा जीवित रहेगी। स्त्रिया पर लिखना कुछ-कुछ फैशन जैसा भी हो गया है और यह प्रवृत्ति इस चयन के लिए आयी कविताओं म भी दिखाई दी। उनमे से वही कविताए ली गयी जो स्त्री की स्थिति को किसी नये ढग से देखती हो या समाज, परिवार और सबधो मे उसकी एक नयी जगह खोजती हो। अनिल गगल लिखते है छू भी नही पायेगी वह गुड़िया का चेहरा/उसकी हथेलिया एड़िया/बिवाइयो से अँट जायेगी।' राधेश्याम शर्मा की कविता मे लड़के के जन्म पर घर मे थाली बजने पर लड़की सवाल करती है कि कन्या जन्म पर ऐसा क्या नही होता। मणि बावरा की कविता मे लकड़हारिन एक शहरी साप' को शाप दती है जिसने उसे दा रुपये क सिक्के की बजाय एक रुपये का सिक्का थमा दिया था।

कुछ कविताए सामाजिक-नैतिक सरोकारा से थोड़ा सा अलग अतीत स्मृति स्वप्न और इच्छाओं क आतरिक ससार को उद्घाटित करती हे। पुष्पलता कश्यप, रूपा पारीक और मजु अरुण की कविताओं मे हमे 'मौन के बोल' सुनाई पड़ते है। एक और स्वर व्यग्य विडबना, फेटसी और कौतुक का मिलाजुला स्वर भी है जो भरत सिह ओला महेन्द्रसिह पूनिया ओर रमेशचद्र बेरागी की कविताओं मे सुना जा सकता है। पर ज्यादातर कवि सामाजिक और मानवीय विसगतियो के बीच एक कवि और एक मनुष्य के रूप मे अपनी स्थिति से साक्षात्कार करते है और सादगी के साथ मर्म को छूने वा‍ला कोइ ब्यौरा दे जाते ह। ओम पुरोहित अपने रेतीले परिवेश को खाली बर्तन सा मरुस्थल मानते हुए पूछते है रेत ने तो नही पिया / सारा का मारा पानी।' बृजमोहन को इस गहरी विडबना का एहसास है कि 'तुम्हारे शब्दो के अस्त्र / प्रभावहीन होकर रह गये हैं / अगर कविता सिर्फ तुम्हे कवि बनाये रखने को जिदा है। कमर मेवाड़ी एक कविता म कवि के निधन पर शोक व्यक्त करने आये लोगा से कहते हैं बहुत दर कर द आपने / अब तो सूना है उसका घर / उसकी गली / यह शहर भी सूना है अब / कहा ढूढ़गे आप उसे / इसी तरह चले जाते है अक्खड़ लोग / बिना बताये / एक लबी यात्रा पर।

इन पक्तियो म कविता की जरूरत आर कवि की उपस्थिति के बार म भी कुछ विचलित कर दने वाली टिप्पणिया दिखाइ देती है। समाज म कवि की स्थिति क्या है ? कविता क लिए क्या काई जगह है और उसकी जरूरत किसे है ? कविता और कवि के होने स क्या होता है ? उपभोक्तावादी और अ- बनते जाते समाज म इस तरह के सवाल स्वाभाविक रूप स उठने लग है

जवाब देना आसान नही है आर कम से कम कवि के पास ता इनका काई हल नही है। सिर्फ नमोनाथ अवस्थी का कविता देखे तो कवि सिर्फ लगड़ाते वसत / घुटने टेकते सावन / और कापती हड्डियो के शिशिर मे सिर्फ अपन 'शब्दो की लड़ाई को ही जारी रख सकता है।

ये सभी शिक्षक कवि अपने-अपने स्तर पर शब्दो की उस लड़ाई म लगे है जो मनुष्य और समाज को ज्यादा मानवीय बनाने की लड़ाइ है। उनके पास कहने के लिए काफी कुछ है और उसे कहने की छटपटाहट भी है। शिक्षक होने के नाते अपने समाज के जटिल यथार्थ स उनका सीधा और जीवत सपर्क है। कविता की कच्ची सामग्री उनके पास बहुत है और सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध दृष्टि भी। कला की दृष्टि से देखे तो लगता है अनुभव को कहने के ढग को लेकर भी उनमे एक तलाश मौजूद है। लेकिन जहा-जहा वह तलाश ढीली पड़ती ह कविता या तो सपाट या शब्द बहुल हा जाती है, वह 'कहना' कम कर देती है और 'बोलने ज्यादा लगती है। कविता मे रूप या शिल्प का कोई कम महत्त्व नही है। अच्छी कविता की पहली शर्त शायद यही है कि उसम कथ्य और शिल्प इतने ज्यादा एक हो जाये कि एक के बगैर दूसरे का अस्तित्व सभव न हो।

रचना का एक बिदु है जहा वस्तु और रूप आपस मे मिल और गुथकर एक-आकार हो जाते है और जैसे किसी जटिल प्रक्रिया मे एक तीसरी चीज़ को जन्म देते है जिसे हम कविता के रूप मे पहचानते है। इस जैविक किस्म की प्रक्रिया से जन्मी कविता ही कम से कम शब्दा मे अपना पूरा वक्तव्य दे पाती है। इस सकलन के कुछ कवि इसके प्रति एक हद तक सजग लगते ह और उनमे कथ्य और शिल्प की कहने और कहने के तरीके की एकता के बिदुओं की तलाश भी दिखाई देती है। यह तलाश जितनी उत्कट, वस्तुपरक और जीवत होती जायेगी कविता भी उतनी ही ज्यादा अर्थपूर्ण बनेगी। आज की कविता का रचनात्मक सघर्ष कम से कम दो स्तरो पर है एक वह सघर्ष है जो हम जीवन के यथार्थ से करते है और दूसरा वह है जो रचना प्रक्रिया के स्तर पर करना होता है और ये दोनो एक साथ जारी रहते है। इस सकलन के रचनाकार इस दुहरे सघर्ष को पहचानने की जरूरत समझते हैं। शायद इसलिए कि वे शिक्षक भी हे और कवि भी।



(मगलेश डबराल)

द्वारा जनसत्ता
बहादुरशाह मार्ग
नई दिल्ली

अनुक्रम

1	रेत की पीड़ा	ओम पुरोहित 'कागद'	19
2	आदमी नही है		19
3	कुछ खो गया है	सत्यनारायण सोनी	21
4	नीव का दर्द		21
5	टहनी का उत्तर	भरतसिंह ओला	22
6	मुडेर से एटीना		22
7	लड़ाई	नमोनाथ अवस्थी	24
8	वजूद	मालचद शर्मा	25
9	तलाश		26
10	मत वदलो आकार	दीनदयाल शर्मा	27
11	हवा	सुरेश हिन्दुस्तानी	28
12	दिन		28
13	आशका	पुष्पलता कश्यप	29
14	सृतियो के अम्बर मे		29
15	कगार की तरह	उषा किरण जैन	30
16	रचना		31
17	सोच के दायरे	मुख्तार टौंकी	32
18	अजनवी धरती		33
19	लौटेगा नही एकलव्य	राधेश्याम 'अटल'	35
20	किसान		36
21	मेरा समन्दर	इस्हाक आलम	38
22	गजल	"	39
23	उतरती हुई नदी	भगवती लाल व्यास	40
24	माँ की सलाह	दिनेश विजयवर्गीय	43
25	सीप सागर और सपने	मायामृग	44
26	सच	महेन्द्र आचार्य	45
27	सुयह होन तक	मीठेश निर्मोही	46
28	क्या	राधेश्याम शर्मा	47
29	वचागे भग	"	47

30	एक प्रश्न	शकुतला गौड़	49
31	उठो घर चलो वावा	अशोक कुमार दवे	50
32	दूसरी धरती पर	वजरग लाल जेदू	51
33	शुरू की समझ	रामकुमार तिवारी	52
34	भोले मत वनो		53
35	इतना ही काफी था	अरविंद तिवारी	54
36	लक्कड़हारी लड़की	मणि वावरा	55
37	महानगर	दशरथ कुमार शर्मा	56
38	पगडडी		56
39	नए सदर्भ	वासुदेव चतुर्वेदी	58
40	गाँव की सस्कृति	रतन 'राहगीर'	60
41	दहशत	श्याम मनोहर व्यास	62
42	क्षणिकाए	विश्वनाथ भाटी	63
43	वेराजगार	राधेश्याम मरावगी	64
44	वन महोत्सव	चैनराम शर्मा	65
45	सूरज का घर	पुरुषोत्तम	66
46	दोहे	नदकिशोर	67
47	मै	करुणा श्रीवास्तव	68
48	तीखी हवा	हरेन्द्र कुमार त्यागी	69
49	तितलिया	प्रेमप्रकाश व्यास	70
50	अप्रैल		71
51	जो कमजोर होते है	निशात	73
52	खुश हुए हम भी		73
53	वन विलाव	कन्हैयालाल भाटी	74
54	गिरगिट		75
55	लड़की	अरनी रॉवर्ट्स	76
56	अधेरो के वीच		77
	लड़किया	जितन्द्र शकर वजाड़	79

58	जीवन	सत्य शकुन	81
59	क्या होता है ऐसा	अजना जगदीश माथुर	82
60	मेरा आदमी	करणीदान बारहठ	84
61	विदा	अशोक पत	86
62	लड़किया	रमेश मयक	87
63	मेमना जीवन दर्शन	सम्पत प्रकाश पारीक	89
64	सिद्धार्थ की तरह	नीरू कुमारी	91
65	गिद्ध	जगदीश प्रसाद सेनी	92
66	जाच रिपोर्ट		93
67	मौन	मजु अरुण	94
68	एक अकेला सूरज	कमर मेवाड़ी	96
69	यात्रा		97
70	आशका	महेन्द्रसिह पूनिया	99
71	मोर	पारसचद जैन	101
72	उसकी परछाई	रमेशचद्र वैरागी	102
73	बूढ़ा होता बच्चा	जनकराज पारीक	103
74	रोग	भविष्यदत्त	104
75	मुझे भी सुविधा है	रूपा पारीक	105
76	लड़की	अनिल गगल	106
77	सड़के रोई	त्रिलोक गोयल	107
78	अध्यापक	सुनीता गेहलोत	109
79	करुण क्रदन	अविनाश चद्र 'चेतक	110
80	स्वैच्छिक सेवानिवृति	आनद एम वासु	111
81	कैद सीखचो म उजास	छीतर लाल साखला	112
82	उनका बचपन	विनोद कुमार यादव	115
83	वर्तुलाकार	शिशुपाल सिंह	116
84	अपना-अपना मुहावरा	गगन बिहारी दाधीच	119

85	निश्चेतन परिवेश	वृजमोहन	120
86	सहयोग	जगदीश चद्र शर्मा	122
87	तव और अव		122
88	गज़ल	रामेश्वर दयाल श्रीमाली	124
89	गज़ल	सुशील व्यास	125
90	गजल	सगीर शाद	126
91	गज़ल		126
92	यथार्थ	प्रकाश तातेड़	128
93	सिगरेट	प्रतिभा सेन	129
94	यथास्थिति	नारायण कृष्ण	130
95	वतन मे	हरिओम कुमार शर्मा	131
96	सवाल रहगे	गिरवर प्रसाद विस्सा	133
97	सड़को पर		134
98	भीतर का सच	नवनीत राय	136
99	काश ऐसा होता	चचल कोठारी	138
100	चिड़िया शेर और ताजमहल	हरीशकुमार शर्मा	140
101	कव वस्ते दिलाओगे	गोपाल प्रसाद मुद्गल	143
102	अचानक	शिवसिह सुमन	144
103	आदत डाल दो	सीताराम व्यास	145
104	टूटते सपने	दीपचद सुथार	146
105	दर्द की चुभन	रामनिवास सोनी	148
106	नही आया कोई अतर	हनुमान दीक्षित	151
107	मेरा द्वार खुला रहने दो	जितेन्द्र	152
108	मिजाजी सामन	जगदीश सुदामा	153
109	आदमी वैसाखियो पर	किशोर करुण	154
110	येवसी	लोकेश झा	156
111	रेत के गुलाव	जगदीश जोशी	158
112	तस्वीर	राजकमल खटाना	160

113	कर दो हरा भरा	दिनेशचद्र श्रीमाल	161
114	स्वच्छदता	रामसुख व्यास	163
115	दरार	डूगर सिह राजपुरोहित	164
116	दुल्हन विकेगी	भोगीलाल पाटीदार	165
117	सभ्यता और हम	अनवर अली	167
118	गजल	अरविन्द चूरूवी	168
119	कौन है	राजेन्द्र कविराज	169
120	दीवारे	रमेश भारद्वाज	170
121	तबादला	भगवती लाल शर्मा	172
122	शर शैया	हरीशचद्र उपाध्याय	174
123	मेरी धरती	भागीरथ भार्गव	175
124	नाम उस नदी के	रविदत्त पालीवाल	176
125	एक स्थिति सवेदनहीन	मगरचद्र दवे	177
126	आतरिक मूल्याकन	स्वर्णकाता मडूला	178
127	अतिम सीढ़ी का दर्द	मीठालाल खत्री	180
128	अविरल युद्ध	गुलाम मोहम्मद	181
129	फागुन बीत गये	ब्रजमोहन द्विवेदी	183
130	चरित्र	शारदा शर्मा	184
131	उल्टा पासा	रूप सिह राठौर	186
132	पीड़ा	भोगीलाल पाटीदार	187
133	अब कहाँ ढूँढे	राजकमल खटाना	189
134	वह शहशाह है	मणि बावरा	191
35	क्षणिकाए	सीताराम व्यास	193
36	जीना महज इत्तिफाक	अशोक पत	194

□

ओम पुरोहित 'कागद'

रेत की पीड़ा

हाँ
जरूर था यहां सागर
मगर
रेत ने तो नहीं पिया
सारा का सारा पानी।
सूरज
जो अटल चमकता रहा
बहुत प्यासा था
आखिर
अपनी सदियां पुरानी
प्यास बुझा गया
और
छोड़ गया
एक खाली बर्तन सा
यह मरूथल।

□

आदमी नहीं है

बहुत नाम था मिट्टी का
मिट्टी भिगोई गई
थापी और पकाई गई
मिट्टी ईंट बनी
ईंट का बहुत नाम हुआ
लोग भूल गये मिट्टी को।

रेत घड़ी

ईंट से घर यना
घर का वहुत नाम हुआ
ईंट भुला दी गई ।

यहुत फैला घर
घर मे आया आदमी
अव
आदमी यहुत वड़ा हो गया
आदमी का यहुत नाम है
आदमी के सामने
घर विल्कुल गौण है

भूली गई मिट्टी
आज भी घर के नीचे है
भूल गई ईंट
आज भी घर की दीवारो म है
पर
आदमी के भीतर
आदमी नही है ।

❏

सत्यनारायण सोनी

कुछ खो गया है

वह आता है
बसंत सा
हसमुख चेहरा लिए
अखबार पढ़ने
कुछ पाने
मगर
चला जाता है
अक्सर
चेहरे पर शिकन लिए
पतझड़ सी
जैसे कुछ खो गया है।

☐

नीव का दर्द

बनना चाहता है
हर कोई
कगूरा
कगूरो की जमात
बढ़ रही है
नीव
कमजोर होती
जमीन मे
धस रही है।

☐

भरतसिंह ओला

टहनी का उत्तर

जब मैं
फूल को हाथ लगाता हूँ
वह छिटक कर
दूर जा गिरता है ।
गुदगुदी घास पर
चुपके से
दो बूंद
छोड़ देती है टहनी

मेरे प्रश्न के
उत्तर के लिए
बढ़िया है
गंदा होने से पहले
मर जाना ।

□

मुंडेर से एंटिना

धापी की मुंडेर पर
जब कौआ बोलता है
वह हँस कर
उड़ा देती है
सोने की चोंच के वादे के साथ
और करती है इंतजार
मेहमान के आने का ।

मोनिका के एंटिना पर
जब कभी कौआ बोलता है
वह हड़बड़ा कर
पत्थर फेकती है
कोसती है
कर्कश आवाज को
करती है दुआ
कही मेहमान न आ जाये ।

□

नमोनाथ अवस्थी

लड़ाई

जब मै शब्दो मे लड़ाई की
बात करता हूँ
तो मेरे सामने अधनगे फटेहाल
गाव इकट्ठे हो जाते हैं
चरमराते शहर
और खस खस खाँसते
माल गोदाम इकट्ठे हो आते है ।
और क्या हो आते है मेरे सामने

लगड़ाते हुए बसत
घुटने टेकते सावन
और कापती हड्डियो के शिशिर
तब मुझे कहना पड़ता है कि

यह लड़ाई तमचो के खिलाफ है
यह लड़ाई सिर्फ लड़ाई नही है
यह एक नदी है
पहाड़ का कलेजा फाड़ती नदी ।
यह एक आग है
बजर और बाझ धरती की
छाती चीरती
मै इस नदी की बात करता हूँ
इसी आग
और इसी आग की बात करता हूँ ।

□

मालचन्द्र शर्मा

वजूद

किसकी कविता लिखे ?
वजूद के उस हिस्से की जो
होता जा रहा है
निरतर मृत
अथवा लिखे उस हिस्से की
जो अब भी
शेष है

लगता यही है कि धीरे धीरे
सारा वजूद सिमट गया है
वजूद को सिमटने
और मिटने से रोकने की कोशिश
हमने कभी नही की
फिर भी शायद शेष है
कोई हिस्सा
तभी तो उभरती है
जेहन मे कविता की बात
क्यो न वजूद के उस जिदा हिस्से की
कविता लिखे
झाके भीतर
और देख क्या है उस हिस्से मे
मिटने का बोध
सिमटने का बोध
तिल तिल कर गलने का बोध
या
हाने का बोध ।

□

तलाश

तलाश की हर सुरग
जहाँ बद होती है
खुलते हैं हमेशा वही से
नये दरीचे पहचान के
शुरू होती है तब
एक और नयी तलाश
पहचान के जगल मे
उगने वाले आत्मीय रिश्तो
और
उनसे जनमने वाली
गध की ।

□

दीनदयाल शर्मा

मत बदलो आकार

तुम
कब तक
बने रहोगे जल
ढालते ही
ढल जाते हो
आखिर
कब तक ढलते रहोगे
सिर्फ एक बार
बर्तन बनकर तो देखो।

❑

सुरेश हिंदुस्तानी

हवा

यह हवा
जब मौन सी हो जाती है
हतप्रभ सी
जाग जाती है बस्ती
उमस की शिकायत
करते हैं लोग
मैं भी उसी आश्चर्य मे
शामिल सा हुआ जाता हू
एक चील आकर बैठ जाती है
मेरे सर पर
और
रौंदते हुए निकल जाते हैं
बूटो के सख्त तले

□

दिन

पहन लू चादर सा दिन
और पाटने मे लग जाऊ सूराख
या फिर आँख ही न खोलू ।
सब कुछ छोड़ बधा चला जाऊ
पा कर एक दिन का सुख ।
या फिर
चादर फाड़ सिर निकाल लू बाहर
पकड़ लू सूराख करते हाथो को ।

□

पुष्पलता कश्यप

आशंका

समय
बदल रहा है
सभी कुछ
बदल रहा है

वर्षों से
पढ़ा लिखा
देखा सुना, सीखा
सब कुछ
बदल रहा है

सभी कुछ
एक साथ
कभी-कभी
कैसे बदल जाता है ।

❐

स्मृतियो के अबार मे

स्मृतियो के अबार मे
न कोई साफ विचार
न कोई साफ स्मृति

विचार ही विचार
स्मृतिया ही स्मृतिया

मेले मे जैसे
चेहरे ही चेहरे

निगाहे जमती नही
कही पर ।

❐

उषा किरण जैन

कगार की तरह

पता ही नही चला
कब परिवर्तित
हो गए इस तरह द्वीप मे
कब कटे आत्मीयता
की जमीन से
खिसकते चले आए
जाने कब अपनी ही
जमीन से
इतनी दूर
और बदल गया
सारा अस्तित्व टापू मे
जहाँ दूर तलक
सिर्फ खारा जल है
यह भी पता नही चला
कब टूट कर
गिरते रहे
कगार की तरह
जाने कब पड़ी दरारे
कब उपेक्षित
होकर दरक गए
खिसक कर
चले गए
इतनी दूर
कि बीच मे आ गया

अनत जलराशि का फासला लेकर
खारे पानी
का सागर ।

□

रचना

मिलना तो है ही
अपने आप से
मगर साथ ही
यह
होना भी है अपने आप का
जो प्रमाण है
इस बात का
कि मिटे नही हैं अभी
हलचल है भीतर
कही गहरे वजूद की
जो ज्वार की
कुछ लहरो के रूप मे
उतर आती है
श्वेत पृष्ठो पर ।

□

मुख़्तार टोंकी

सोच के दायरे

चुप सा हू
कुछ सोच रहा हू।
इन आखो से
दुनिया देख रहा हू।
कितनी पुरानी धरती है ?
कितना बूढ़ा अम्बर है ?
कितनी सदिया पहले
मानव जन्मा होगा ?
कितनी तहज़ीये पनपी ?
कितने पीर पैगम्बर आये ?
कितने मज़हब दुनिया मे फैले
क्या मानव का उद्धार हुआ ?
कितने टापू उभरे हैं ?
कितने देशो का निर्माण हुआ
कितने राष्ट्र बने
कितने राजे मैदान मे आये
कितने धरती पर युद्ध हुए
कितना किस का खून बहा ?
कितना नरसहार हुआ ?
क्या मानव का उपकार हुआ ?
कितने कवि और कितने विचारक आये

कितनी किताबे दुनिया मे छपी,
कितने वैज्ञानिक आविष्कार हुए
कितनी भाषाए बोली जाती है
क्या प्यार की भाषा का विस्तार हुआ ?
क्यो मानव लाचार हुआ ?

❑

अजनबी धरती

कहा से भटक कर
यहा आ गया हू।
यह धरती
देखी भाली है
पर यह क्या माजरा है ?
भीड़ ही भीड़ है।
बाजार सड़के भरी हैं
नर-नारियो से
मगर
सब अजनबी हैं।
परस्पर
बात करते नही हैं।
चहुदिश
है चेहरे ही चेहरे
मगर
सब दुखी हैं।
सब के कधा के ऊपर-
चुप की अर्थी रखी है।
सभी गूगे-अन्धे हैं शायद

कोई जिंदा नही है
वाशिदे
किसी दूसरे ग्रह-उपग्रह के
यहा आ बसे है ।
यह धरती
मेरी धरती नही है
मै यहा पर
गलत आ गया हू ।

□

राधेश्याम अटल

लौटेगा नही एकलव्य

अब मिटाना चाहूँगा
अपने माथे का कलक
धरती पर लिखना चाहूँगा
मौन वृक्षो की भाषा
उतारना चाहूँगा आदमी को
आदमी बनाकर धरती पर
अब लौटेगा नही एकलव्य
निराश मुँह लटकाये
इस जानवरो के जगल मे।

अब नही माँगूगा दक्षिणा मे
एकलव्य से अँगूठा
उतार कर रहूँगा उसमे
कबीर की आत्मा
शबरी का राम
और नुक्कड़ का 'सफदर उसमे
उगा कर रहूँगा।

अगर नही भी आया
एकलव्य
तो ढूँढ़ कर लाऊँगा उसे
चूमूगा उसका चेहरा
सीने मे उतारूँगा उसके
धरती की गध
पलाश सा महकाऊँगा उसे

तपाऊँगा सूरज सा
पूरा करके रहूँगा
अपना संकल्प,
हस्तिनापुर के सिंहासन पर
एक दिन देखना
मंद-मंद मुस्कराएगा एकलव्य ।

❒

किसान

इसकी पीठ पर खेला है
भर बैशाख का सूरज
कभी छाया नहीं तलाशी इसने
तम्बाकू सी पी गया चुपचाप
चिलम में जिंदगी का दर्द
कभी मांगी नहीं इसने
किसी से दो मुट्ठी ज्वार
अकेले झेला है
अकाल अपने दम पर
किसी खजाने की बाबत
कभी ज्योतिषी से नहीं पूछा

इसने कभी नहीं फेंका
अपने कंधे से जूआ
समय का बोझ ढोया है
जीवट से जीया है भरपूर
गीता का निष्काम कर्म
आंधी की छाती पे इसने
मन्न आग जलाई है ।

लेकिन
जब देखता है
बैलो के पुट्ठो पर
पैनी के निशान
अपना अतीत
याद आता है उसे
भिच जाती है मुटिठया
और आँखे
अगार हो जाती है ।

❑

इस्हाक 'आलम'

मेरा समदर

मैं समदर मे हूँ
समदर मेरे अदर ।
मेरा समदर
रोज देखता है
विशाल समदर मे
मछलिया निकालते परिश्रमी हाथो को
हेरोइन, सोना चादी से भरे जहाजो को
टक-टकी लगाये छिपी आखो को
हिलोरे लेता है
मेरा समदर
किसे छुऊ

मेरा समदर
परिश्रमी हाथो की मछलिया छोड़
हेरोईन, सोने चादी से भरे जहाज को लेता है
जब हमारे गदे पैर से
अपना मकान गदा होता है,
तो मकान को साफ करते हैं हम
गदे कपड़ो और बदन को धोते हैं हम ।
पर झूठ ईर्ष्या चरित्रहीन जहाजो से
गदा करते हैं
अपने समदर को हम ।
असत्य ईर्ष्या, चरित्रहीन जहाजो को
अगर मैं
अपने समदर म तैरने न दू
तो विशाल समदर

साफ रह सकता है
शान्त सुन्दर रह सकता है ।
तब मेरा समदर
चुपके से कोई चीज नही हरेगा ।
हेरोईन, सोने चादी से भरे जहाज को नही छुएगा ।
पानी के लिए झूठ नही बोलेगा
मरा समदर ।

□

ग़ज़ल

मागर काले
पत्थर काले
लाल शहर म
घर काले
सफेद दीवार
दफ्तर काले
ऊपर उजले
अदर काले
धुआ धुआ फिजा
मजर काले

□

तेर म्हारी

भगवती लाल व्यास

उतरती हुई नदी

वह उतरती हुई नदी
तूफान से उबरी नाव की तरह
औरो को उबारती
भय रहित करती नेत्रो को
आशका रहित हृदय को
उजली इतनी कि
जैसे अभी-अभी
नहा कर कोई बच्ची
बैठी हो मा की गोद मे
चोटी गुथवाने।

किवदतियो का मैल
नही है अब उसके बदन पर
उसके मोती जैसे दात
देख सकती हैं अब
उसकी सहेलिया
किसी भी समय
उसकी फूला वाली
फ्रॉक सूख रही है
ढलती धूप की खूटी पर
प्रफुल्लित है वह
यौवन से बचपन मे
लौट कर।

नदी के साथ
यही सच है कि

वह नही होती कभी
जरा-जर्जर
या तो वह उद्दाम
यौवन वेग से आपूरित
रहती है आठो याम
या फिर लौट आती है
ननिहाल
रेत के घरौंदे बनाती
पजो पर
और मुस्कराती बद ओठो मे
उनके बिखर जाने पर।
इस बीच
कई पड़ाव हैं नदी के
मगर उनका जिक्र नही करती वह
पड़ावो का जिक्र करते है
शस्त्र, शास्त्र या विदूषक
कुछ कहने के लिए
स्थिति चाहिए
नदी स्थित नही रहती
इसीलिए कुछ नही कहती
अभी भी मौन है वह।

समय की तरह
उम्र की पूनी से
सास क तार कातती
लगातार
क्षण भर को रुकती
तार को समेटती
अटरन पर
फि र वही तार
तार तार विस्तार।

रेत घड़ी

तार से तार मिलाती नदी
चुपचाप बुनती है एक
मगनीदार दोहर
लपेट लेती है हर शाम
इसे अपने चारो ओर
मुह बाहर निकाले
देखती है टुकुर टुकुर
जैसे कोई शिशु
देखता हा पहली बार
अपना घर।

□

दिनेश विजयवर्गीय

मां की सलाह

एक दिन शाम को
गर्म चाय के ठण्डा होने की प्रतीक्षा करते
किशोर होती बेटी को
मा ने सलाह दी
अब तू सयानी होने लगी है
अपने छोटे भाई की तरह
गली मोहल्ले म खेलने की जिद
मत किया कर
छत पर खड़ी हो
पड़ोस के पतग उड़ाने वाले लड़को के
उत्साह मे मत शामिल हो

बस सीधी
घर से स्कूल और स्कूल से घर लौट
पढाई लिखाई के साथ
अब दाल - चावल को सफाई से बीनना सीख
रोटी को गोलाई देना

चटपटी सब्जी और चटनी बनाना
सिलाई बुनाई के तानो मे
जीवन को सतुलित बनाये रखना
कम बोलना बड़ो को आदर से सुनना
घर आये मेहमानो का
गभीर मुस्कान के साथ स्वागत करना
और जीवन सघर्ष को
चुप - चुप सहना ।

❏

सीप सागर और सपने

सीपी की आँखो मे है
सपने
मोती के सपने ।
सीपी के भीतर है
उमड़ता सागर ।
सागर सपना मे आ गया है,
सीपी की नींद मे
निदिया गया है ।
उसकी उनींदी अधखुली आँखे
मोती सी चमकती है ।
सीपी क सपना की
फिर से पहचान जरूरी है
उसने सागर के सपने देखे,
मोती तो
उसके भीतर ही उमड़ता था कहीं ।
निराकाक्ष सागर की
जय बोलते तटो को
ठीक से समझा दो
सीपी की आँखा मे
मोती के सपने
मोती मे
उमड़ते सागर के सपने
और सीपी के भीतर उमड़
मोती हो जाने के सपने
सीपी ने नही
सागर ने देखे है ।

□

मीठेश निर्मोही

सुबह होने तक

तुम सौंपना चाहते हो उजास
और मैं हूं कि
सधे हुए कदमों
बढ़ना चाहता हूं
अधर स दो   दो हाथ करते
लोक   गीत गुनगुनाते हुए/ एक सी चाल चलने

तुम फिर से मुझे
करना चाहते हो अस्त व्यस्त
मेरे कधे थपकाते हुए
चिथड़ा हसी हसते हसते
शताब्दिया से इसी तरह ठगते आए हो तुम
यह मैं जान गया हू।

तुम मेरे इन घिसे हुए जूतो की तरफ
मत देखो
मेरे क़दमा पर भरोसा रखो
तुम निश्चित रहो
पहुँच जाऊगा मैं
तुम्हारे शहर
धूल भर रास्तो से होता हुआ
सुबह होने तक।

□

राधेश्याम शर्मा

क्यो

शहर की सुनसान गलियो मे
साय साय चलती हवाओं म
खडहर हुए मकानो के टूटे दरवाजा पर लटकी
टूटी कालवेल ने पूछा
यहन !
क्या कोई आ रहा है फिर मेरा उपयोग करन ?
क्या ट्रिन ट्रिन की आवाज के साथ
फिर गूज उठेंगी वच्चो की आवाज इन घरो म ?

आह ! वे भी क्या दिन थे
जव इस शहर की सड़को पर होता था शोर
मोटर गाड़ियो का ।
सुनाई पड़ती थी धर्म के ठेकेदारो की जोशीली आवाजे
इस शहर के घरो मे ।

अव क्यो नही गूजती वच्चा की आवाजे ?
गिरजाघर की घड़ी कई हफ्तो से क्यो वद पड़ी है ?
मदिर की घटियो की गूज कहा गुम हो चुकी है ?
क्यो नही उठती किसी मस्जिद से अजान की आवाजे ?
आखिर क्यो ?

❐

बेचारी भैस

चौराहे पर खड़ी भैस की पूछ
आरती की ओर जाने वाले रास्ते की दिशा मे थी

और मुह आराधन की तरफ जाने वाले रास्ते की दिशा मे
भैस पहले से इसी मुद्रा म खड़ी थी,
क्योंकि भैस के पीछे खड़ी थी एक जर्जर टूटी लाठी।
(लाठी तो लाठी है नई हो या पुरानी)
अचानक एक नई और सशक्त लाठी और
भैस के सामने आ खड़ी हुई
बलवान स तो सभी डरते हैं ऐसा तुलसी ने भी कहा है
नई लाठी क डर म भैस की पूछ आराधन की दिशा मे
तथा मुँह आरती की दिशा मे हो गया।
लाठियो से तग आकर वह भाग जाना चाहती थी
उस हरे भरे जगल की तरफ जहा न तो कोई लाठी हो
और न चौराहे की भीड़।
पर बेचारी भैस जब भी ऐसा प्रयास करती
उसके सामने आ जाती थी कोई न कोई लाठी।

❐

शकुंतला गौड़

एक प्रश्न

अपने घर के आगन मे
वजती थाली की आवाज सुन
खेतो से लौटते वापू को
खुश होते देख
नन्ही झुनिया ने पूछा
वापू !
अपने घर
थाली क्यो वजाई है ?

वापू वोला
जन्मा तेरा भाई है
इसीलिए थाली वजाई है ।

झुनिया ने फिर पूछा
गये साल मुनिया भी तो जन्मी थी
तव थाली क्यो नही वजी थी

वापू ने कहा
अरी वावली
तू और मुनिया तो पराई है
भला
लड़की के जन्म पर
किसने थाली वजाई है ?

□

अशोक कुमार दवे

उठो घर चलो बावा

और कितना चलना है
दिन ढल रहा है
अब बस करो बावा
क्या पेट भरने तक
नही कमा पाये ?
अब और आगे चलना मुश्किल है
लगता है आपकी पहले की सेहत
अब तक काम दे रही है–
हम उस तक शायद ही पहुँच पायेगे बावा

गला सूख रहा है
मुझे पानी चाहिए
चारो ओर घूम आया
कही पानी नजर नही आया
इस रेत के मैदान मे
और कोई नही है
उठो ! पाँव से काँटा निकालो बावा

और कितना सोओगे
मै नही डरता
रात गुजर रही है
अब तो घर चलो बावा

अरे ! यह हाथ ढीला हो गया
मुँह भी !
यह तुम्हे क्या हो गया
भूख सहन नही हो रही मुझे
उठो ! घर चलो बावा !

बजरगलाल जेठू

दूसरी धरती पर

घटते इसान बढ़ती बस्तिया
गाढ़ा होता पानी, पतला उसमे रक्त होगा
ठडा होता सूरज
धरती का वस्त्र, धधकता गोला होगा
मन कही बैठा
बुद्धि के इस खेल को हृदयहीन हो देख रहा होगा।

मानवी छेड़छाड़ धरती से
कल्पना हो या यथार्थ
शिल्प हो या अनुभूति
सच को फीका करती है
धरती आखिर धरती है।

बहुत रचा उसने ससार
कवि ने सह लिया काफी अत्याचार
चलता रहा काले सिर की बुद्धि का चमत्कार
तो सृजन हेतु
कवि का सहारा लेना होगा।

अब की बार
जब भी लेना होगा भगवान को अवतार
कोई नया जहा ढूढना होगा।

या फिर कवि को
किसी दूसरी धरती पर
सृजन कर्म करना होगा।

□

रामकुमार तिवारी

शुरू की समझ

इस बड़े शहर मे, अपना भी कोई रहता है
जिसे हम जानते हैं, वह अपना है
यह हमारी शुरू की समझ थी

बाद मे किसी ने बताया
इसे पहचान कहते है,
अपना कुछ और ही होता है।
हमारी जिज्ञासा बढ़ी
हमारा स्व स्वीकृत हो
हमने अपनेपन को हाका
अपनेपन ने हमको हाका

अपनी परिधि बढ़ी, एक चादर तनी
धागे से धागा उलझा, छोर लुप्त हो गया

स्व ने एक दिन अपना अहसास कराने
सिर उठाया आक्रोश किया
तेवर भी बदले
परतु चादर मे,
कोई हलचल नही

वह और उसका स्व दोनो बुदबुदाये
एक सहमी सी शाम दरवाजा खिसखिसाया।
कहा जा रहे हो ?
इस बड़े शहर मे अपना भी कोई रहता है।

□

भोले मत बनो

पक्षी सर उठा कर बोला,
साथियो !
हर रात सोने से पहले,
अपने को सभालो ।
आजकल तने मे
सरसराहट है
जरूर कही कुछ है
आशका है
मेरा अनुभव मानो
साथियो !
हर रात सोने से पहले
अपने को
सभाल लो
याद है
वह बरसात की रात ?
घोसला
पानी से भर गया
भूखे पेट
और
चिपके पखो ने
अडजो को
प्राणो से सेका था ।

❑

अरविंद तिवारी

इतना ही काफी था

घर मे भगवान स्थापित रहे
गली भी रही यथास्थान
एक लड़के ने एक लड़की की गली मे
फिल्मी गाना गाया
लड़के का नाम अहमद
लड़की का नाम राखी था।
लोगो के लिए इतना ही काफी था।

आरती और अजान के स्वर
पूर्ववत ही बोले थे
एक छोटे लड़के ने
होली की तरग मे
गैर पर रग उडेल दिया
जितना पिचकारी मे बाकी था
लोगो के लिए इतना ही काफी था।

मणिबावरा

लक्कड़हारी लड़की

मूसलाधार वर्षा को
अपने फटे पल्लू से
निचोड़ती
वह लक्कड़हारी लड़की पूछती है
'यह एक का सिक्का है या दो का
'एक का
'मुझे दो का कह कर दिया है
कहती लड़की
आसूमय हो उठी
रोटी उसकी आधी हो उठी
खेत की मुंडेर पर काग भगोड़े भगाते
पति की भूख
अतड़ियो मे चीख उठी
वह जानती है
कि बेशुमार बेलगाम
वर्षा पानी अधड़ आधी मे
उसके आसुओं की औकात कुछ नही
फिर भी रोती है
थोड़ा सा गुस्साती है
और चल देती है
शाप देती हुई–
उस शहरी साप को
जिसने उसकी हथेली पर
एक का सिक्का
यह कह कर रख दिया
कि यह दो का है।

□

दशरथकुमार शर्मा

महानगर

जिस शहर मे
आदमी रात को पटरी पर सो जाता है
वह शहर बौना हो जाता है
कड़ी गरमी मे रिक्शे पर
जब आदमी आदमी को ढोता है
तो आदमी के तन से चूता हुआ पसीना
कहता है

केवल आधे पेट भोजन के लिए
हमारा तन ही नही मन भी रोता है ।
शहर का आदमी वही तो काटता है
जो वह बोता है

महानगर के ध्वनि प्रदूषण मे
मानवता की आवाज जब खो जाती है
तो लगता है जैसे कोई जवानी मे ही
विधवा हो जाती है ।

□

पगडडी

मैं जब भी अपने गाव से
शहर की ओर चला
दोपहरी म चला
और पगडडी पर चला ।

क्योंकि राजपथ पर
अब भी ठग लुटेरे और
पिंडारी बैठे थे।

कई जगहों पर मुझे
राजपथ पार करना पड़ा
मैंने राजपथ सुनसान जगहों
से ही पार किया।

□

दम तोड़ गया
ऊँचाइयाँ नापता
नीले आसमान की
बाते करता
धर्म और ईमान की
ममी मे लिपटा
कोई आदमी
अपनी आदमियत से
वेपरदा होकर
वर्षों से जैसे का जैसा
खड़ा का खड़ा है,
न जाने क्यो ?
आज का आदमी
उसे किताबो मे
ढूढता हुआ ठूँठ सा खड़ा है

अपने भीतर का पानी
उड़ कर कपूर हो गया,
जिस रोशनाई से
इतिहास लिखा था
वह अतीत कल के
दामन मे छिप गया,
नए सदर्भों के
अर्थों के साथ
आज आदमी
न जाने कहाँ खो गया।

❑

वासुदेव चतुर्वेदी

नए संदर्भ

नए संदर्भों के कुछ
अर्थ ढूँढते
न जाने क्यों
बीता हुआ कल
आज कचोटता है
सब कुछ वैसा ही है
जैसा पहले था
हर संदर्भ
नए अर्थ में
कुछ कहता है

कल तक आदमी
आदमी ही था
आज भी आदमी
आदमी को आदमी कहते हैं
समझ में नहीं आता
आज के आदमी से
कल के आदमी
कहानी क्यों नहीं कहते हैं ?

क्यों बदल गया
सब कुछ
देखते ही देखते
क्या बदल गया ?
एक का ईमान
दूसरे का मजहब
मंदिर की चौखट पर

दम तोड़ गया
ऊँचाइयाँ नापता
नीले आसमान की
बाते करता
धर्म और ईमान की
ममी मे लिपटा
कोई आदमी
अपनी आदमियत से
वेपरदा होकर
वर्षों से जैसे का जैसा
खड़ा का खड़ा है,
न जाने क्यो ?
आज का आदमी
उसे कितावो मे
ढूढता हुआ ठूँठ सा खड़ा है

अपने भीतर का पानी
उड़ कर कपूर हो गया,
जिस रोशनाई से
इतिहास लिखा था
वह अतीत कल के
दामन मे छिप गया
नए सदर्भों के
अर्थों के साथ
आज आदमी
न जाने कहाँ खो गया ।

रतन 'राहगीर'

गाँव की संस्कृति

घर की गली के किनारे
नीम पीपल के पेड़
मेरे अजीज मित्रो की तरह
अडिग हैं
मेरे घर से बहुत दूर
मुस्कराते स्वर्ण धूल के टिब्बे
आज भी स्वागत करते है
हर आगत का

पुराने-नये
नये पुराने हो गये घर
हवा निर्बाध गति से बह रही
फिर भी
बहुत कुछ बदला-बदला सा
दम घोटू
परपराए कचोटती है
जख्म हरा करती है
मेरे गाँव मे।

बरगद के पेड़ की जटाए
हिल उठती हैं
आधुनिक सभ्यता के झोको से
फिर भी
स्वाभिमान की दुआए देते
सफेदे
नीला आकाश छूने को आतुर हैं
मेरे गाँव मे।

बरगद और सफेदो के बीच
खेजड़ा छोड़ता है छाप
कड़वा नीम स्वागत करता
हर आगत का
मेरे गाव मे ।
खेतिहर मजदूर
और
श्रम की पुजारिने
स्वागत करती है
छाछ से
मेरे गाँव मे ।

खडहर किला
खोखले वृक्ष
झुर्रियो भरे चेहरे
सस्कृति की छाप छोड़ते
मेरे गाँव मे ।
स्वर्ण धूल के टिब्बो से घिरी
झुग्गी-झोपडियाँ
शिल्प-कला की कथा कहती
मेरे अपने गाँव मे ।

❐

श्याम मनोहर व्यास

दहशत

शहर की सूनी सड़के,
रास्ते पर खिची लकीरे खून की,
कर्फ्यू का सायरन बजता हुआ
फायर ब्रिगेड़ की गाड़ी
शोर मचाती चिल्लाती
भीड़ का एक रेला
इधर की बुर्ज पर
उधर की मीनार पर
नारो का बोझ लाद रहा,
गलियो मे मलवे का ढ़ेर,
घिन फैला रहा
दूध के लिए रोते नन्हे बच्चे
भूख के मारे बेहाल बूढ़ी माँ
असहाय रोगी चेहरे पर पीड़ा लिये,
बेबस नजरो से देख रहे है।
एक अमीर तस्कर की कार
उन्माद फैलाती
चीत्कारे बढ़ाती जा रही है
शहर के इस मोहल्ले म
दहशत फैला रही है
प्रश्न चिन्ह उभार रही है।

विश्वनाथ भाटी

क्षणिकाएँ

(I)

देखो, वह बालक
खेल ही खेल मे
अपने नन्हे-नन्ह हाथो से
धरती के उजले आँचल पर
उठी रज-तरगो से
किलोल कर रहा है
मानो
पृथ्वी का सारा प्यार
अपनी मुट्ठियो मे भर रहा है।

❒

(II)

लका
सोने की थी
तभी तो
कुमकरण जैसे लोग
सोये रहते थे।

❒

राधेश्याम सरावगी

बेरोजगार

अकाल-दर-अकाल की
मार सहते सहते
भूखे प्यासे नगे तन
बेरोजगारी गरीबी से
तग आकर
अपने ही गाव की सीमा मे
अपनी ही आत्मा को
गिरवी रखकर
शहर के भूखो और बेरोजगारो की तरह
दो जून की रोटी का
जुगाड़ बैठाने का प्रयास करते-करते
निरीह असहाय
विफलता को दिल मे छिपाये
पुन लौट आते हैं
गाव की सीमा पर
मगर दोपहर की तरह
बुत बने वही ठहर गये
भावहीन हो गये
जड़वत हो गये
भूखे प्यासे नगे तन को ओढ़े
वही ढेर हो गये

❐

चैनराम शर्मा

वन महोत्सव

ये इस बार भी बड़ी धूम धाम से
वन महोत्सव मना रहे हैं
और
प्रतिवर्ष की भाँति
उसी गड्ढे में पौधा लगा रहे हैं ।

ये काँटेदार झाड़, ये भद्दे से ठूँठ काट दो,
इस पुराने गड्ढे को पाट दो ।
कल हम यहाँ
वन महोत्सव मनायेंगे ।
एक नया गड्ढा बनाओ
जिसमें हमारे मुख्य अतिथि
कैक्टस का पौधा लगायेंगे

आज वन महोत्सव
बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।
एक गुल मोहर का पौधा लगाकर
बड़े साहब ने अपना फोटो खिंचवाया
और पुराने बबूल को कटवाकर
बाड़ के रूप में लगवाया ।

□

रेत पर्री

पुरुषोतम

सूरज का घर

मै रोज सूरज को
पहाड़ी के पीछे से
उदय होता देखता हूँ
लगता है
पहाड़ी के पीछे ही सूरज का घर है ।

वह रोज मेरा ही चेहरा देखता है
क्योंकि मै उसके सामने होता हूँ
अनायास कभी उसका दिन खराब निकलेगा
तो वह मुझे ही कोसेगा
और हो सकता है
वह मुझसे बदला भी ले बैठे
यही मुझे डर है ।

कभी-कभी बादल सूरज को बाँध लेते है
वह तिलमिलाता सोचता
परवश हुआ
सुबह किसका मुँह देखा ?
और वह लाल पीला होता है
मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि
इस पहाड़ी के पीछे
सूरज का घर नही है ।

□

नद किशोर

दोहे

महगाई की मार से कमर गई है टूट ।
बिन पैसे मिलती नही पानी की दो घूँट ।।

कुछ मदिर मे खो गए कुछ मस्जिद मे लीन ।
इनके झगड़ो से हुई भारत माँ श्रीहीन ।।

बरगद पीपल नीम की ठडी ठडी छाव ।
खिले खाखरे, खेजड़े आना मेरे गाँव ।।

शहरो का श्रृंगार कर दुखी हुए देहात ।
दिन मे उड़ती धूल यहाँ और अधेरी रात ।।

मेहनत कश भूखे मरे मौज करे बेईमान ।
ईश्वर तू क्यो सो गया लम्बी खूटी तान ।।

कहने को आजाद हम अग्रेजो से आज ।
पर अग्रेजी कर रही भारत ऊपर राज ।।

घोड़ो को नही घास यहाँ गधे जीमते खीर ।
सत्ता सुख के वास्ते बैठे सभी अधीर ।।

❑

करूणा श्रीवास्तव

मैं

मै ढूँढ़ती हूँ स्वय को
इधर - उधर के
चक्र मे
मन की गहराई मे
वीराने मे अधेरे मे
ढूंढती हूँ स्वय को
ससार के द्वीप मे
सागर मे
रोशनी मे
भूले हुए अतीत मे
यादो की धूल मे
कोरे पन्ने के
इतिहास मे
खुशी मे ढूढ़ती हूँ स्वय को

कितनी अनजान हूँ
मैं
टूट चुकी हूँ बिखर चुकी हूँ
समा चुका हूँ
उस चट्टान मे
जो हिल नही सकती
चाहे कितने ही भूकप आयें
यह मैं हूँ
और मैं ढूँढ़ चुकी हूँ स्वय को

□

हरेंद्र कुमार त्यागी

तीखी हवा

आज
हवा बहुत तीखी है
वेदनाओं के वैराट्य को भी
रही चीर ।

मानव
चादर लपेटे खाल की
ककाल पर अपने
उड़नशील
ज्वलनशील
नश्वर धूम्र धुधलको मे
कर रहा ताडव ।

पुनरावृत्ति युगो की
मात्र
यही उसकी नियति
चीर देगी सब कुछ
हवा बहुत
बहुत तीखी है ।

❒

प्रेम प्रकाश व्यास

तितलियाँ

दोस्त !
लोग तितलियो को क्यो इकट्ठा करते हैं ?
वे मरी हुई
ऊदे रगो वाली
चटख तीखे रगो वाली
निष्प्राण तितलियाँ,
जो किताबो के वर्कों मे वद है,
किन्ही खुशनुमा लम्हो की तरह
क्या हम भी
वक्त को चुराकर इसी तरह
वद नहीं करते ?

दरअसल वक्त को वाधना
ही मुश्किल है
आसान तो है उसमे से कुछ लम्हो को
तितलियो की तरह चुराकर
यादो के वरको के वीच दबा देना
उनके रग
उतने ही खुशनुमा रहते हैं दोस्त
जितने वे लम्हे
जो किसी लम्बे सफर के चद टुकड़े हैं
या
ऊँची पहाड़ी पर सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते
वोले हुए
हाँफती आवाज़ के कुछ लफ्ज़
या झुरमुट मे खोती हुई सीढ़ियों से

अचानक तुम्हारा
निकल कर खिलखिलाना,
या पहाड़ पर उगे घने पेड़ की भीगी
डालियो को हिलाकर
भिगो डालना,
भीतर गहरे तक
दोस्त,
ये ही वे तितलियाँ हैं
जो आज भी
वरको मे बन्द हैं,
जब हम उन्हे खोलते हैं,
उनके चटख
तीखे रग हमे आँखो मे चुभते है,
और जब हम उन्हे छूते हैं
तो कानो के लवे तक लाल हो जाते हैं,
दोस्त !
आज भी उनकी धड़कने
हमे अपनी हथेली के नीचे
महसूस होती है।

❑

अप्रैल

अप्रैल की धड़धड़ाती हवा मे,
हम वहाँ नही थे,
दोस्त !
हमारे अवशेष ही थे,
जो
हमे जिला रहे थे,
और

हम उस भयानक भविष्य को
सोचते निष्पद थे
जहाँ
एक अतहीन समय का समुद्र था,
और उसमे हमे उतरना था,
जहाँ हमारा एक दूसरे को पहचानना
असभव नही तो कठिन अवश्य था
सूखी पीली पत्तियाँ उस
लबी सड़क पर
फरफरा कर उड़ रही थी
और हम नगे होते पेड़ो को देखकर स्तब्ध थे
उन पत्तियो को चुनते थे हम
जिनकी गध मे सुबक थी
सड़क लबी थी,
सड़क पर हम थे
और
तेज धूप के तीखे काच के टुकड़ो ने
हमे
लगभग अधा कर दिया था।

❐

निशात

जो कमजोर होते है

जो कमजोर होते हैं
वे उतने ही सतर्क होते है
उन्हे पता रहता है
तगड़ो का मुकावला वे तभी कर पाएगे
जब वे उन से
कई गुना ज्यादा हाथ पाव चलाएगे
तभी तो जीतता है
खरगोश से कछुआ ।

❐

खुश हुए हम भी

खुश हुए वे लूट का धन पाकर
खुश हुए वे अच्छा खाकर
खुश हुए वे मुनाफा कमा कर
खुश हुए वे अच्छी फसल पाकर
खुश हुए वे सत्ता पाकर
खुश हुए हम भी
शाम को
अपने वीवी बच्चो के बीच आकर ।

❐

कन्हैया लाल भाटी

वन - विलाव

सुना है वन विलाव
जब रास्ता काटता है
ढेर सा दु ख बढ़ जाता है ।
सुख घट जाता है ।
बना काम बिगड़ता है ।
ऐसे मे कभी महाराणा प्रताप के बच्चो को
मुह ताकना पड़ा था
इसी वन बिलाव की चोरी से
सूखी रोटी का ।

बच्चे आज भी
टुकड़ो के लिए बिलखते
पर आज वन विलाव
समाज के त्रास से
कर दिए हैं दो पैर वाले ।
सूखी रोटी को तरसाते
गरीबो के हक को छीनते ।
आज के वन विलाव
सफेद पोश सेवक
जनता के नाम पर
पेट काटते अपनो का
चाटुकार धोखेवाज मशहूर हीरो
चमचे अपना उल्लू
सीधा करते

अपनो को ही निगल कर
जय-जयकार करवाते है
मुर्गा बाग देता ज्यो
वन बिलाव झपटकर
भागता लेकर
सत्तारूढ़ पार्टी का नेता बनकर
यह है हमारे युग का
सफेद पोश
वन बिलाव ।

❐

गिरगिट

[स्व अज्ञेय से क्षमा याचना सहित]
ओ गिरगिट !
तुम नेता तो नही
मत्री बनना तुम्हे नही आया ।
फिर कैसे
रग बदलना सीखा
और यह नाम कहा से पाया ।

❐

रेत घड़ी

अरनी रावर्ट्स

लड़की

घर का सारा बोझ
लड़की के कधो पर है
लड़का सिर्फ खेलता है
पढ़ता है और हसता है
क्योंकि वह एक लड़का है
लड़की कई हिस्सो म
वटी हुई है
एक गैर जिम्मेदार वाप
का विकल्प है वह।
छोटी वड़ी तमाम फ़िक्रो को
ढोती है
अपने नाजुक कधो पर।
तमाम व्यवस्थाओं को पूरी
करने मे वह अपना
वजूद भूल जाती है।
लड़की वीमार कमजोर मा
की जगह खड़ी होती है।
एक वालिका से वदलकर
मा वन जाती है अचानक
दवा से लेकर चूल्हे चक्की
के वीच एक
कड़ी वन जाती है।
घर का पर्याय वन
दीवारो को आत्मसात
कर लेती है

उसका सर छत बन जाता है
और स्वय झुलसकर
धूप से बचाती है वह
परिवार को।
तमाम हादसो सुखो और
दु खो के बीच
लड़की धैर्य धर जूझती है।
स्वय को बेहद
अकेला पाकर
रो भी देती है लड़की।
दाल चावल बीनते हुए
या बुहारा पोचा
करते हुए उसके
आसू टपक जाते है
जिन्हे कोई नही देखता।
इतना सब होने पर भी
टूटती नही है लड़की।
रो लेने के बाद
और भी मजबूत हो जाती है।
कई हिस्सो मे
बटने के बाद भी
वह एक लड़की है
एक छोटी सी लड़की।

❑

अंधेरो के बीच

सबने सूरज को बाट लिया
अपनी अपनी झोली मे।
रोशनी मे उजागर कुछ चेहरे

जेठ मास

जैसे स्याही पोत दी
हो रात ने ।
कुकरमुत्ते उग आये हैं
गुलाब की झाड़ियो में ।
अगुली मे चुभा काटा
उभरी तर्जनी पर लहू की
एक सुर्ख बूद
हवा हस पड़ी और
चिड़ियाँ उड़ गईं ।
आओ अपनी किश्तिया
डुबो दे साहिल पर-
तूफानो ने देख लिया तो
मथित कर देगे
झील के उजले दर्पण को
मछलिया मर जायेगी
और जाल उलझ जायेगे
मछुआरो के इर्द गिर्द ।
दरवाजे, खिड़किया रोशनदान
सब बद है ।
रोशनी को
तरसती है निगाहे
व्याप्त सन्नाटे मे
खोजता है हर कोई
अपने अस्तित्व की पहचान ।

❑

जितेन्द्र शंकर बजाड़

लड़कियां

लड़किया
पढ़ती नही है अक्सर
कभी किसी कक्षा मे जाकर
मैने देखा है गणित के घटे मे उन्हे
जोड़ के सवाल का उत्तर
घटती सख्या मे लिखते हुए
पूछने पर बताती है वे
कैसा है उनका जवाब
अपने हिसाब से

दोपहर की घन्टी मे बुनती है स्वेटर
और भूल जाती है फन्दे
भरी दुपहरी मे देखते हुए सपने
असल मे हो जाती है सलाइया वे खुद,
हाँ, होते हैं, छोटी बड़ी / बैठी खड़ी
लड़कियो से बनी सलाइयो के नम्बर भी
एकदम समान
बिल्कुल एक से

कई बार पाया है मैने / धुले हुए कपड़ो को फटा हुआ
घिस देती है लड़किया उन्हे ब्रश से
जरूरत से ज्यादा ही
खुद अपनी जिन्दगी उजलाने के प्रयास मे

देखी है मैने / प्रयोगशाला के
जार मे उफनती / भाप बनकर उड़ती
टेस्ट ट्यूब सी मुड़ती
और उपकरण हो जाती लड़किया

तुमन भी
दखी हागी लड़किया
विज्ञापना, टीवी सीरियल्स और फिल्मा म
पर वे नही होती लड़किया सचमुच
होत है उनके चित्र,
यह सच ह मर मित्र !
लड़किया जब पढ़ती है किताब व उनम ढूढती उत्तर
उन प्रश्ना क, जा लिख नहीं हात है वहाँ
देखना तुम दौड़ती भागती
कूदती फादती लड़किया क पल छिन
दिखाई दग तुम्ह / उनम उनक
रुक चुक / रूधे बध / पल छिन
लड़किया दिखाइ दती ह / जब कुछ लिखती हुई
झुकी सी अपनी मज पर
लिखती है अपनी कहानी बतार गृह कार्य के
हल करते हुए सवाल
जिसे पढ़ नही पाता है शिक्षक
कापी जाच के दौरान
लड़किया पढ़ती नही है / अक्सर
देखना तुम भी कभी
किसी कक्षा मे जाकर ।

❒

सत्य शकुन

जीवन

बारात म
सगीत का धुन पर
लहराती इतराती मदमस्त टोलिया
परिधाना की छटा बिखरती
इत्रा की महक फैलाती
इन्द्रधनुष की सी आभा बिखरती
चली जा रही खरामा खरामा।

जावन ह कितना जीवत !
कहा ह इसका अत ?
क्या जीवन को रिसना मानू ?
क्या इसको बोझिल समझू ?
कौन यहा जो न दमकता हीरे सा ?
कौन यहा जिसका यौवन खिलता न सूर्यमुखी सा ?

देखा,
बारात क साथ साथ,
रोशनी के हड ऊचाय उन पराय लोगो का
जिनके कदम थके थकाये
मुख ह मुर्झाये मुर्झाये
न जाने कितनी चिताओं को है ये ओढ़े उढ़ाये
अधेरा के साये मे अपने को लिपटाये
अनगिनत सवालो के बाधे ये सेहरे,
चले जा रहे है रोशनी के सहारे,

क्या यह जीवन नही है रिसता ?
क्या यह जीवन नही है घिसटता ?

अंजना जगदीश माथुर

क्यों होता है ऐसा

क्या होता है ऐसा
हम शांति का ठाँव की खोज में निकलते हैं
और राह रेगिस्तानी वियावान तक ले जाती है

नंगे पैर
छाल फूटते हुए
रिसते हुए खून की लकीर
किसी को दिखाई भी नहीं देती
अशांति फिर अंगूठा दिखाती
धम धम करती आ बैठती है
आत्मा के पीढ़े पर

क्या होता है ऐसा
आत्मा मुक्ति की तलाश मे
ससार के सुख दु ख मे पल्ला झटकाकर भागती
और जा बैठती है सुपुप्त ज्वालामुखी के मुहाने प

शायद शांति वहाँ भी नहीं
क्योंकि अकेला पाते ही मन
वही खाता खोल लेता है पुराने हिसाब का
जहाँ सुख की अनुभूति
आरती के थाल की कपूर बाती बन जाती है
क्षणिक मुस्कान आती है और चली जाती है

और दु ख
शनि की साढ़ साती सा मन प्राण पर
छा जाता है
रक्त का कण-कण निचोड़ लेने का तत्पर

क्या नहीं होता ऐसा
कि हम असपृक्त होकर सब कुछ देख भोगे
बस देखे भोगे
डूबे नहीं ।

❒

करणीदान बारहठ

मेरा आदमी

मेरा आदमी खो गया है
उसे तलाश करो।
मै अपना आवेदन प्रस्तुत करता हू
कहा मिलेगा अब वह आदमी
बड़ा मुश्किल लगता है।

यह शहर तो कोई बीहड़ जगल है
लगता है लोग
सभी उखड़कर किसी तूफान म
उड़ते जा रहे है भागे जा रहे है।
यहाँ तो नही है वह आदमी
इनके चेहरे भी आदमी जैसे नही ह।
ये स्पष्ट भी नही हे।

कहाँ ढूँढ़ूँ मेरे आदमी को
तुम तलाश कर रहे हो ?
गाँवो मे ?
वे गाँव तो सभी उजड़ गए है।
उनमे उग आई है कुछ शैताना की हवेलिया
जिनमे रक्त चूसने के यत्र लगे है।
ढाणियो मे ?
अरे कहाँ ? ये सब दूध की जगह
काली मटमैली चाय पीते है।
हुक्के और चिलम के स्थान पर
बीड़ी चूमते है।

सर्वत्र शहर ने इन्हे
सड़को से जोड़ लिया है
वहाँ मलयानिल को खदेड़ कर
प्रदूषण पहुँच गया है।

क्या कोई सूचना आई है।
मेरा आदमी मर गया है
नही। नही।।
मेरा आदमी मर नही सकता।
मेरा आदमी तो मार दिया गया है।

□

करणीदान बारहठ

मेरा आदमी

मेरा आदमी खो गया है
उसे तलाश करो।
मै अपना आवेदन प्रस्तुत करता हू
कहा मिलेगा अव वह आदमी
बड़ा मुश्किल लगता है।

यह शहर तो कोई बीहड़ जगल है
लगता है लोग
सभी उखड़कर किसी तूफान म
उड़ते जा रहे है भागे जा रहे है।
यहाँ तो नही है वह आदमी
इनके चेहरे भी आदमी जैसे नही है।
ये स्पष्ट भी नही है।

कहाँ ढूँढू मेरे आदमी को
तुम तलाश कर रहे हो ?
गाँवो मे ?
वे गाँव तो सभी उजड़ गए है।
उनमे उग आई है कुछ शैताना की हवेलिया
जिनमे रक्त चूसने के यत्र लगे है।
ढाणिया मे ?
अरे कहाँ ? ये सब दूध की जगह
काली मटमैली चाय पीते है।
हुक्के और चिलम के स्थान पर
बीड़ी चूसते हैं।

रमेश मयक

लड़कियाँ

लड़कियाँ सहेज कर रखती है
रूमाल, सुई, धागा, सलाइयाँ
उनकी इच्छा होती है
रूमाल तुरपने की
फूल बनाने की
कसीदा काढ़ने की
स्कार्फ स्वेटर जरसी के फद डालने की
कापियो से पन्ने फाड़कर
बागा मे झूला घाल्या
गेद गजरा के गीत उतारने की
एक दाण आवो जी गुनगुनाने की
रसोई - घर मे माँ का हाथ बटाने की

मुझे अच्छा लगता है
लड़कियो का होम वर्क की कापी मे
वेरी गुड लाना
सतत् मूल्याकन मे 'ए प्लस लिखाना
सबसे ज्यादा अक लाने पर शाबासी पाना
खुशहाली का आधार बन जाना
राष्ट्रीय एकता की दौड़ मे शामिल हो जाना
जब लड़कियाँ

शिक्षित सस्कारवान
स्वय के प्रति सचेत हो जायेगी
अखबारो मे

तत पड़ी

अशोक पन्त

विदा

माँ पिता की सजल आँखे
भाई भाभी के कब आओगे' शब्द
और
छोटे बच्चो की कतारबद्ध चरण स्पर्श की मुद्रा
कौंधती है अतर की तलहटी मे

तेज दौड़ रही रेल से भी
कही अधिक दौड़ा दो दिन
और
पुन लौट पड़ा हूँ
अपने कर्म स्थल को
रोजी कितना दूर करती है
अपनो से
हर बार महसूस करता हू
घर की सगी होकर भी
कितना सौतेला बनाती है
इस पर विसूरता हू
शहर लौट कर चिट्ठी के वक्ष पर
फिर भी झूठ लिखता हूँ
यात्रा मे कष्ट न हुआ
मैं यहा सकुशल हूँ।

□

रमेश मयक

लडकियाँ

लड़कियाँ सहेज कर रखती है
रूमाल, सुई धागा, सलाइयाँ
उनकी इच्छा होती है
रूमाल तुरपने की
फूल बनाने की
कसीदा काढ़ने की
स्कार्फ स्वेटर, जरसी के फद डालने की
कापियो से पन्ने फाड़कर
बागा मे झूला घाल्या,
गेद गजरा के गीत उतारने की
एक दाण आवो जी गुनगुनाने की
रसोई - घर मे माँ का हाथ बटाने की

मुझे अच्छा लगता है
लड़कियो का होम वर्क की कापी मे
'वेरी गुड लाना
सतत् मूल्याकन मे 'ए प्लस' लिखाना
सबसे ज्यादा अक लाने पर शाबासी पाना
खुशहाली का आधार बन जाना
राष्ट्रीय एकता की दौड़ मे शामिल हो जाना
जब लड़कियाँ

शिक्षित, सस्कारवान
स्वय के प्रति सचेत हो जायेगी
अखबारो मे

दहेज के अभाव म जलने की
बलात्कार की शिकार हो जाने की
आत्म   हत्या के लिए विवश होकर
गले मे फाँसी का फदा लगाने की
खबरे नही छपेगी
सचमुच
वह दिन कब आयेगा ?

□

सपत प्रकाश पारीक

मेमना जीवन दर्शन

वह भेड़िया
आज भी उन्ही मेमनो पर घात लगाये
धूर्त मुस्कान,चमकते दात और लपलपाती जीभ

एक कहानी सुनी थी मेमने और भेड़िये की
समय पार कहानिया हो जाती है
मगर भेड़िया आज भी जिदा है
कहानी पुरानी नही होगी
सृजन क्या है
शिल्प, सगीत तान इन्हे नही पहचानता
उसे केवल दिखता है मानवीय मेमनो का वह
छप्पन भोगी मास और स्वाद
जिसे वह स्वप्न मे भी झिझोड़ता है

यह कहानी कभी पुरानी नही होगी
रिश्ते नाते समाज, परम्पराएँ सबध
सभी गौण है
भेड़िये को उससे क्या प्रयोजन है
बस तुम तो केवल मेमनो को किसी बहाने खाए जाओ
कदाचित् हर बार नया बहाना खोज कर

मगर मेमना !
उसकी तो यही नियति है
यह समाज रूपी मेमना आखिर पहुचता है
भेड़िये रूपी महाजन के पास
जो प्रतीक है सड़ी गली व्यवस्था का

जिससे सबध है शोषित और शोषक के
कभी भेड़िया भी नैतिकता का वितडा फैलाकर
देखता है निर्निमेष मेमने की तरह
और मेमना
आहत, पीड़ित, आखो मे अजीब भाव लिये
इतजार करता है - एक नये युग का प्राची से
मगर वह अरुणिमा उसे पीढ़ियो तक नही मिलेगी
क्यो कि अवरोध लगा रखे है
भेड़िये समूहो ने ।

❑

नीरू कुमारी

सिद्धार्थ की तरह

एक दिन मैं भी चली
सुख ढूढ़ने के लिए
तुरत सड़क पर मिला
एक छोटा बच्चा नगे पैर
कटोरा लिये
आगे देखा एक भीड़ खड़ी थी
रोजगार के लिए
उससे आगे
एक वहू जल रही थी दहेज के लिए
दुख देखकर सिद्धार्थ तो बुद्ध बन गए
मगर मैं तो इन दुखो को देख
अपना अस्तित्व भी खो चली ।

❐

जगदीश प्रसाद सैनी

गिद्ध

सड़क पर पड़ी लाश
नोच रहे गिद्ध
जुड़ी है भीड़
खड़ी है पुलिस
पत्रकार नेता कवि
और भी तरह तरह के लोग
सभी के चेहरो पर लिखा है
अवसि देखिये देखन जोगू ।

खुश है गिद्ध
मिल गया खाना
खुश है भीड़
तमाशे का ऐसा मौका फिर नही आना
खुश है पुलिस
जम कर पैसा खायेगे
खुश है पत्रकार
एक खबर मिली
कुछ और नमक मिर्च मिलायेगे ।

खुश हैं नेताजी भी
मामले को खूब उछालेगे
मुमकिन है
सरकार ही बदल डालेगे
कविजी की खुशी का क्या ठिकाना
मन ही मन बुनने लगे हैं

मंजु अरुण

मौन

मौन
तुम एक सफल वक्ता हो !
बातों के अंतिम छोर पर
जब शब्द पस्त हो जाते हैं
तुम थाम लेते हो उनकी बागडोर

मौन
तब तुम सक्रिय होते हो
मैं समझ लेती हूँ तुम्हारी भाषा
और प्रयास करती हूँ
कि तुम्हारी उघड़ी देह को
ढक दूं

मौन
उस रोज तुम मिले थे मुझे
उम्र के निष्प्राण पड़ाव में
अपनी कथा सुना रहे थे सबको
शरीर की नश्वरता और मन की अस्मिता के उपदेश

यह और बात थी
कि तुम्हारे स्वरों की प्रखरता से बेखबर लोग
चीख चीख मना रहे थे मातम
बेजान देह का
परोक्ष रूप से
तुम्हारे सात्विक बोलों का भी
जो कभी असत् नहीं होता

कमर मेवाड़ी

एक अकेला सूरज

एक डरावने जगल के बीच
फस गया हू मै
जहाँ हर वक्त
पसरा रहता है
एक जानलेवा सन्नाटा

जगल के बीच रहने वाला प्राणी
बन जाता है जगली
करता है अनेक कुकर्म
काटता है मूल्यवान वृक्ष
मारता है अनुपलब्ध जीव
सहार करता है सुन्दर पक्षियो का
और उजाड़ देता है सम्पूर्ण जगल

ऐसे एक डरावने जगल के बीच
फस गया हूँ मै
जहा हर वक्त
जान हलक मे अटकी रहती है
नही पहुचता है वहाँ
समुद्र का शोर
बादल का गर्जन
पक्षियो का कलरव
सूरज की किरणे
गदराई स्त्रिया के मीठे बोल

वहाँ सिर्फ एक ... जगल
जो हर वक्त ...

□

यात्रा

कुछ लोग आये और उसे ले गये
अपने कंधों पर उठा कर
और उसे मिट्टी के नीचे दबा दिया

वह दबंग था
मिट्टी और हाजिर जवाब
खुरदरा और अक्खड़
जब वह गुजरता था
लोग करते थे उसके अहंकार की चर्चा

पर वह अहंकारी कतई नहीं था
उसने लिखी थीं अनेक कविताएं
पिछड़े-कुचले लोगों के समर्थन में
हाँ वही कवि
जो आते-जाते
कभी-कभी प्रणाम भी करता था आपको
जो बहुत ज्यादा विवादास्पद था
अपनी कविताओं के कारण
आज नहीं रहा चला गया
लोगों के कंधों पर चढ़ कर

रेत घड़ी

आज आप उससे मिलने आये है
वहुत देर कर दी आपने
अव ता सूना है उसका घर
उसकी गली
यह शहर भी सूना है आज
कहाँ ढूढेगे आप उसे
सड़क पर
वाजार मे
अपने दोस्त के साथ किसी होटल मे
नही
कही नही है वह आज
इसी तरह चले जाते है अक्खड़ लोग
बिना वताये एक लम्वी यात्रा पर ।

❑

महेन्द्र सिंह पूनिया

आशका

मैने प्रचार किया और इतजार किया
जागृति का बेदारी का क्रान्ति का
मैंने बनाये कुछ साथी, कुछ हमराही
समता और न्याय के पैरोकार
जुल्म से, अन्याय से, शोषण से
लड़ के मिटने को तैयार
पर शायद मेरा सप्रेषण कमजोर था
या फिर स्वार्थ और अधता का जोर था।
मेरा एक हमराही आज परमिट बाट रहा है
साथी साथियो की खाल उतार रहा है,
दूसरा दहेज मे मिली कार मे घूम रहा है
भूल कर सारा इकलाब
क्लब मे किसी की मदभरी अगड़ाइयाँ चूम रहा है
तीसरा शिलान्यास कराने चला गया है
और जाते-जाते मुझे
धर्म और कौम का दुश्मन बता गया है
चौथा आजकल मुखौटो की दुकान पर जाता है
और रोज एक नया मुखौटा खरीद लाता है
वह मुझे चुप कराने के लिए
एक कुर्सी दिखाता है
और इनकार म सिर हिलाने पर
डीड़म बताता है।
शेष म लगता है जोश है
पर गहराई म झाँकने पर दखता है

रेत पड़ी

नपुसक आक्रोश है
अभी-अभी एक साथी आकर गया है
गले मे तावीज का पूछने पर
बूढ़ी माँ का दिल रखने की
बात बताकर गया है ।
लगता है इनके जोश मे
तेज़ाब नही गली की धूल है
किस भाषा मे बात करू इस जनता से
जो मेरे अभियान का मूल है ?

❐

पारसचद जैन

मोर

मोर, मतकरो शोर
इन वादलो को देखकर
ये वादल नही है वरसने वाले
ये हैं सिर्फ गरजने वाले
पहले भी देख चुके हो
तुम इन्हे पुकार कर
सव मिल कर छा गये थे गगन मे
तुमने सोचा अव वरसेगे जमकर
पर वरसने से पहले ही
इनके सम आवेश टकरा गये
और देखते ही देखते
छितरा गये
केवल इन्हे देखकर
मत करो शोर
ये वही सम आवेशी वादल हैं
जिनके आवेश फिर टकरा जायेगे
और वरसने से पहले ही
ये फिर छितरा जायेगे ।

□

रमेशचन्द्र बैरागी

उसकी परछाईं

गर्मियो के दिन
अपने बेडरूम मे कूलर की हवा खा रहा था
कृत्रिम घास के मैदान मे प्लास्टिक के फूल उगा रहा था
अचानक मुझे स्वच्छद हवा मे विचरण का
विचार आया
उसी क्षण मैंने अपने आपको कल्पना के पहाड़
पर पाया
सत्य का उद्घोष करता उस पर्वत की चारुता
और उपत्यका मे कलकल बहती सरिता
किनारे खड़े पेड़ धैर्य और शाति के प्रतीक
धर्म के फूल और कर्म के फल आचल मे समेटे
अचानक कूलर की तेज घरघराहट
मेरे कानो से टकरायी
उसकी टूटी पखुड़ी मुझे वापस अपने कमरे मे
खीच लायी ।

❑

जनकराज पारीक

बूढ़ा होता बच्चा

वह शहर मे आया
पिता की अगुली थाम
और आते ही जवान हो गया।
उसकी तुतलाहट कारखानो के शोर मे खो गइ
और वदन का लहू पसीना वन कर चूने लगा।

जो कल तक वित्ते भर का बच्चा था
आज चिमनियो से उठते धुए के साथ
आसमान को छूने लगा।
अव वह बादलो को देख कर हुलसता नही
न चदा मामा से चादी मागता है
न विजलियो से डरता है।

एक अबूझ पहेली
उसके लगातार बूढ़े होते मन मे
उठती है
तिलमिलाती है।
जैसे-जैसे वह उसका हल
निकालने की कोशिश करता है
वह उसके भीतर सन्नाटे मे
उलझती चली जाती है।

❒

भविष्य दत्त

रोग

मुझे वही रोग है
जो तुम्हे है
और तुम्हे जो रोग है
वह उसे भी है
जिसको देखो वही
इस रोग से ग्रस्त है
यानी हम सबको
एक ही रोग ने
जकड़ रखा है
इसकी गिरफ्त दर गिरफ्त मे हम
कितनी सीढ़िया उतर गये पता नही
कितनी दीवारे खड़ी कर ली
पता नही ।
दीवारे शीशे की
जिनके पार उभरने वाले दृश्य
दिखाई तो देते है
सुनाई कुछ नही देता
और हम आँखे फेरे
चल पड़ते हैं एक ओर
सीढ़ी उतरने ।

☐

रूपा पारीक

मुझे भी सुविधा है

मुझे भी सुविधा है
सागर के किनारे बैठकर
मीठा पानी पीने की
अपनी गागर से

पर मैंने तो उलट दिया है
अपना अमृत कलश सागर मे
उसे मीठा करने की कोशिश मे
मुझे नही चाहिए सहानुभूति
लोगो की
क्योंकि वे जिसे कहते है सुख
वह है जीवाश्म उसका
वे कहते हैं जिसे दु ख
वह है जीवित सुख
जो मरेगा साथ मेरे
अमर होने के लिए ।

❑

अनिल गंगल

लड़की

वह रोएगी भी नही
और चुपचाप अधेरे गर्भ से बाहर आ जाएगी
छू भी नही पाएगी वह गुड़िया का चेहरा
कि उसकी हथेलियाँ और एड़ियाँ
बिवाइयो से अँट जाएगी
पजो को साधते सीखती होगी वह खड़े होना
कि सब चीखते होगे
उसके इस तरह तेजी से बड़े होने पर
पहली रोटी वह बेल भी नही पाएगी
कि रोटियाँ कोयले मे बदलने लगेगी
चूल्हा फूँकते हुए
उसकी आँखे आग सी दहकती होगी
कि फेकी गयी थाली के नीचे
वह कराहती मिलेगी
छिपा भी नही पाएगी वह अपना चेहरा
माँ की गोद मे
कि हल्दी और तेल मे सनी वह
सिसकती पायी जाएगी
देख भी नही पाएगी उजाले की किरन
कि चुपके से दरवाजा खोल
स्याह अधेरे मे गुम हो जाएगी ।

□

त्रिलोक गोयल

सड़के रोई

कल सड़के मेरे पास आकर बहुत रोई
हमारा दर्द कोई नही जानता
कोई नही मानता
सुनता नही कोई '

हम केवल
जोड़ती ही जोड़ती रही थी
चेहरे से चेहरे को
गाव को
शहरो को
नदियो को
नहरो को
अब तक हमने
सिर्फ प्यार की बेल ही बोई
कल सड़के मेरे पास आकर बहुत रोईं ।।

हम लोगो को चलना सिखाती थी
सभ्यता-सस्कृति का रास्ता दिखाती थी
पथिक को अपने गतव्य तक पहुँचाती थी
चाँद ने स्वर्ण पर्यंक पर सुलाया,
सूरज के दूध से धोई ।
कल सड़के मेरे पास आकर बहुत रोईं !!

अनिल गगल

लड़की

वह रोएगी भी नही
और चुपचाप अंधेरे गर्भ से बाहर आ जाएगी
छू भी नही पाएगी वह गुड़िया का चेहरा
कि उसकी हथेलियाँ और एड़ियाँ
बिवाइयो से अँट जाएगी
पंजो को साधते सीखती होगी वह खड़े होना
कि सब चीखते होगे
उसके इस तरह तेजी से बड़े होने पर
पहली रोटी वह बेल भी नही पाएगी
कि रोटियाँ कोयले मे बदलने लगेगी
चूल्हा फूँकते हुए
उसकी आँखे आग सी दहकती होगी
कि फेकी गयी थाली के नीचे
वह कराहती मिलेगी
छिपा भी नही पाएगी वह अपना चेहरा
माँ की गोद मे
कि हल्दी और तेल मे सनी वह
सिसकती पायी जाएगी
देख भी नही पाएगी उजाले की किरन
कि चुपके से दरवाजा खोल
स्याह अंधेरे मे गुम हो जाएगी ।

□

सुनीता गेहलोत

अध्यापक

आज का अध्यापक कहाँ है अध्यापक ?
वह एक बजर खेत है
विद्यार्थी बिखरे पड़े हैं जहाँ
अनगिनत ककड़ो की तरह
वह एक सूखा पेड़ है
आँचल मे पड़े हैं कर्णधार
सूखे पत्ता की तरह
जो इतजार करते हैं नई कोपलो का ।

❐

रेत घड़ी

अनचाहे हर बोझ चुपचाप सहे ?
इस अधेर घुप्प को–
रामराज ग्रामराज जनतन्त्र कहे ?
गरजत नारे
बरसते भाषण
सत्य से चुपड़े हुए झूठे आश्वासन
सब कुछ रौंद रहे ये कार बगले।
मछलियाँ निगल रहे ये भगत बगुले ॥
टूटता न आकाश
फटती न धरती
माँ होकर बेटो की लाशे भी ढोई।
कल सड़के मेरे पास आकर बहुत रोईं ॥

सुनीता गेहलोत

अध्यापक

आज का अध्यापक कहाँ है अध्यापक ?
वह एक वजर खेत है
विद्यार्थी बिखरे पड़े हैं जहाँ
अनगिनत ककड़ो की तरह
वह एक सूखा पेड़ है
आँचल मे पड़े हैं कर्णधार
सूखे पत्ता की तरह
जो इतजार करते है नई कोपलो का ।

❑

अविनाश चद्र 'चेतक'

करुण-क्रंदन

जानी अनजानी सी
वह आवाज
न सुख से परिपूर्ण
न दुख से रहित
एक दर्द भरी आह
सुनने को मिली ।
चीख पड़ा मैं
देखने लगा आश्चर्य से
रखोगे मुझे
अधेरे मे कब तक ?
आशाओं ने स्वीकृति म कहा
एक मदभरी मुस्कान लेकर
मैंने जमी पर देखा ह
जीवन को टूटत हुए
सपना को बिखरते हुए
इच्छाओं को मिटते हुए ।

ा

आनद एम वासु

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

उसने विजय पा ली है अब
अब वह निरचू भी है
बस उसके शब्दो म
गति नही रह गई है
उसने निजात पा ली है
नौकरी से
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर।

उसका गला रुदन से भरा था
क्योंकि उसने मुक्ति पा ली थी
वह जब अपनी इस
जीवन यात्रा का रिपोर्ताज
सुना रहा था, तो अचानक उसे
उन अद्‍भुत क्षणो का
अहसास हुआ
अब वह सेवानिवृत्त हो चुका था
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ।

☐

छीतर लाल साँखला

कैद सीकचो मे उजास

हँसता है कोहरा
धुँधलाकर
सूरज के सपने।

दिवास्वप्न देखा सूरज ने
फूला के खिलने का
धरती की सोधी खुशबू मे
पूरा घुल मिलने का
तरुवर की पत्ती शाखाए
खुश होकर हिलने का
भेदभाव की उभरी उभरी
ये गाँठे छिलने का

लेकिन लगा कोहरा
जग को
अंधियारे से रँगने

सूरज ने देखा किसान को
धरती मे हल चलाते
कधो पर ले भारी बोझा
बैलो को चलते
सूरज लगा पोछने आँसू
आँखा के ढलते
लगा सकने
ठिठुराते पद
लोगा के गलते

देख भोर को आता
काली राते
लगी डरपने

रौदा है सर धरती का
तम की बोझिल लातो ने
कैद सीकचो मे उजास को
तड़पाया रातो ने
कर डाली घायल यह धरती
तीखे आघातो ने
भरमाया मौसम को
रजनी की मीठी बातो ने

लगी तिमिर की
करतूते सब
अखबारो मे छपने

रिसती आँखो के दुखते है
सूजे हुए पपोटे
पेट भूख से सिकुड़ाया है
पड़ने लगी सिलोटे
कोर्ट कचहरी ने ठुकराई
अपनी लिखी रिपोटे
लगा बगावत करने यह दिल
तड़पे और कचौटे

ठिठुराई फसलो को मौसम
देता नही क्यो
तपने

कैद सीकचो मे उजास पर
रह पाया है कब तक

रेत घड़ा

तपती भट्टी मे अगारा
सुर्ख हुआ नही कब तक
तड़ित तेज काले बादल से
ढक पाया है कब तक
बीज पड़ा गीली धरती मे
दबा रहा है कब तक

फूट निकलते पाषाणो से
कल कल करते झरने ।

❐

विनोद कुमार यादव

उनका बचपन

आए है धरा पर
वे भी औरो की तरह
फिर भी क्या
जुटे है वे हाथ
बनाये रखने को अस्तित्व
उस शरीर का जिसके वे हाथ हैं
ऐसे समय
जो कि है उनके
खेलने खाने का विकसित होने का
अलग-अलग रूपो मे
लगे है वे
झिड़किया सुनने मे
कभी घुसे है वे हाथ
जूठे बरतनो मे
वे हाथ ही बने है
सिरहाना उस सिर का
जो हो गया है चेतना शून्य
फिर भी पिचके हैं वे पेट
फिर भी उभरी हैं वे आते
क्यो हम सोच लेते है या
निष्कर्ष निकालते बिना साचे
कि उनका भाग्य ही ऐसा है।

शिशुपाल सिंह

वर्तुलाकार

चादनी का हसना
सूरज का डूबना
बादलो की घटाओं का
क्षितिज से उठना
और बरसना
मिट्टी की सौंधी गध
किसान और मजदूर के
पसीने की गध को
काश । मैंने अनुभव किया होता
और जाना होता
मानव
अस्तित्व का मूल्य
पुलक कर तेरा होता मन
स्वाधीनता की लहरो पर
आखो मे पाले होते
विराट नियति के
स्वप्न

चिड़ियो का कलरव
गाय और बछड़ो का रम्भाना
और गोधूलि मे ग्वालो का लौट
मा की ममता और वात्सल्य
जीवन का प्रकृत प्राण
क्षितिज पर उगते चाद का

धवल प्रकाश
काश ! चौपालो की सुनी होती आत्मा
बैठा होता पचायतो की बैठक मे
सुनी होती नियति की
खड़कम और देश म वहते नये पुराने
नि स्वास
और देखा होता
देश के भाल के
सूर्य का डूबना
और मचलके ऊँचे उठने की
भावना
पहचाना होता यदि आजादी का
पूर्व स्वप्न
डूबते वर्तमान
और आगत के अधियारे का दर्द
जाना होता यदि अर्थ
टूटते क्षितिज
और प्रसव लेती नयी
आत्मा का
तो मैं समझ पाता
कहा है रोटी । अस्तित्व का धरातल
कहा है आदमी
कहा है ससद

यदि मैं इतिहास के सागर म
डूबा होता
पीता कसैला जल
झेलता ज्वाराघात
फस गया होता

ते पड़ी

किसी घड़ियाली जवड़ो म
तो जानता
कहा है रोटी
कहा है आदमी
कहा है ससद
और कहा है नियति का त
रोटी से ससद के
सस्कार कितने भ्रामक
और वर्तुलाकार हैं ।

□

गगन बिहारी दाधीच

अपना अपना मुहावरा

हर कोई बना रहा है,
मुहावरा अपना-अपना
खो ही गया है मानव
स्वनिर्मित विम्वो मे
जिन्हे वह देखने गया था,
देखना तो पद चिन्हो को था
और इतिहास बनाना था,
लेकिन बना वैठे–
विम्वो से उलझे विचार
समय अव भी है
विम्वो को पदचिन्ह बना दो
वक्त का तकाजा यही है
वरना रेस कोर्स की दौड़
हर किसी को नही लुभाती
सज्ञा देने और
सत्ता पाने मे वेहद अन्तर है
अन्तर तो हाथो की लकीरो मे
एक निजी रूप से इगित होता है
तो फिर विम्वो मे क्या नही होगा
अव चाहे आकारित
एक जैसे ही क्यो न हो
मुहावरे अलग-अलग नही
अव एक समीकरण वनाए
ताकि मुहावरा जिन्दा रह सके
विचारो की मानिन्द।

□

बृजमोहन

निश्चेतन परिवेश

मूद ले
कस कर आँखे
और
खो जा नींद मे
कवि

तेरा सोचना
विचरना कल्पना मे
और
हिलोरना निश्चेतन समाज को
अब कही कोई
मायने नही रखता

सवेदनशीलता अब
पलायन के रास्ते चल पड़ी है
और उसका वापस लौटना
नामुमकिन है इस युग मे शायद
उल्टे कानो के सम्मुख
अब तुम्हारे शब्दो के अस्त्र
प्रभावहीन होकर रह गये है
और तुम्हारी कविता
सिर्फ तुम्हे
कवि बनाये रखने को जिन्दा है

तुम्हारे शब्द अब
तुम्ही पर अट्टहास कर रहे है
और तुम्हारी डायरी के पन्ने

तुम्हारी
अपमान यात्रा के
संदेश वाहक बन
उड़ जाना चाहते हैं
उन्मुक्त आकाश में

और विलीन हो जाने को उत्सुक है
ब्रह्माण्ड के उन असख्य शब्द नाद के बीच
जहाँ से तुमने
उन्हे उधार लिया था
अपने और औरो के लिए।

□

जगदीश चद्र शर्मा

सहयोग

जा
पहले था
नही रहा अव
रूप रग
सहयोग शब्द का।
निर्वासन ले चुकी
आज
निस्वार्थ भावना।
मगलमयी कामना को भी
युग का झझावात
ले उड़ा।

अव
जो कुछ भी
शेप वचा है
वह आदान प्रदान
परस्पर
अनुवधी पीड़ा से
वहुत कराह रहा है।

□

तव और अव

कवूतर
आपस मे
उसी तरह मिलते हैं

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

गजल

न समझा इनकी जगह लगे वे भले हागे
जो होगे एक ही तो पालने पले होगे ।

गधे की खाल देखकर वहम मे मत रहना
भेड़िये अब गधे की खाल मे पले होगे ।

मस्जिदो मन्दिरो मे घुस गई सियासत है
सन्त दरवेश जो दिखते है मनचले हागे ।

यहा मनहूसियत छाई हुई है मरघट सी
अस्ल घी के चिराग उनके घर जले होगे ।

जिन्हाने किया था वादा कि हम दगे खुशियाँ
उन्हाने खुशगवार स्वप्न तक छले होगे ।

जों कहते आओ लड़े मिल के न्याय पाने को
सच में ये कुर्सियाँ पाने के चोचले हागे ।

यहाँ जो जश्न की है राशनी कहूँ बेशक
लाखो घर-बस्तियाँ अधेरे के तले होगे ।

फूल फल-पात की उनसे अपेक्षा मत रखना
जितने दीखगे ऊँचे वृक्ष खाखले हागे ।

☐

सुशील व्यास

गजल

किस छोर तक उड़े मेरे अरमान देखिए
इस मुल्क मे मिले कही इन्सान देखिए ।

पत्थर की इमारत मे, पत्थर का बसेरा है
इस पर भी हसी ख्वाब कि भगवान देखिए ।

सौदे मे शहर का मेरे सूरज भी बिक गया
मजबूर मन करे है कि ईमान देखिए ।

अपनी नज़र मे आप अभी भी शरीफ है
माना नज़र का धोखा है पर शान देखिए ।

खामोश हर लहर है, किनारे उदार हैं
ठहरा सा कही लगता है, तूफान देखिए ।

कितना बड़ा गुनाह है, सच कहना ए 'सुशील
हैवान मे हैवान नही, इन्सान देखिए ।

❑

समीर 'शाद'

गजल

उठा के हाथ न पतवार से जुदा रखना ।
फसे भँवर मे सफीना तो होसला रखना ।।

शबे फिराक के मारो को खूब आता है ।
फलक के चाँद सितारो से राबता रखना ।।

उड़ा के ले ता चली खाक मेरे मदफन की ।
रख ता सहमे चमन मे उस हवा रखना ।।

मदद खुदा की थी वरना यह काम मुश्किल था
हवा के सामने जलता हुआ दीया रखना ।

मै शाद हूँ मेरी आदत है मुस्कुराने की
मेरा मिजाज नही दिल बुझा बुझा रखना ।

सहन को बाँट ले दीवार भी उठा लेकिन
दिलो मे भाई तू मिलने का रास्ता रखना ।

□

गजल

किसी का उजड़ा जहाँ हूँ मुझे तलाश न कर ।
मै रजो गम का निशाँ हूँ मुझे तलाश न कर ।।

तू अपने ऐश की दुनिया सँवार ले लेकिन ।
मै जैसा और जहाँ हूँ मुझे तलाश न कर ।।

हवा मे मिलके नज़र भी न आऊँगा एक दिन ।
धुआँ हूँ देख धुआँ हूँ मुझे तलाश न कर ।।

क्यो अपने आपकी तखलीक़ से नही समझा ।
हर एक शै से अयाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

हर एक फूल की खुशबू मेरा मुकद्दर है ।
बहारे-नौ मैं जवाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

बहुत अमीक़ है मफ्हूम का मेरे दरया ।
खुदा का हुस्ने-बयाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

जो जाके लौटा नही इस जहाँ मे 'शाद' कभी ।
मैं एक ऐसा समा हूँ मुझे तलाश न कर ॥

सगीर 'शाद'

ग़ज़ल

उठा के हाथ न पतवार से जुदा रखना ।
फँसे भँवर में सफीना तो हौसला रखना ॥

शबे फिराक़ के मारों को खूब आता है ।
फलक के चाँद सितारों से राब्ता रखना ॥

उड़ा के ले तो चली ख़ाक मेरे मदफन की ।
रखे तो महमे चमन में उसे हवा रखना ॥

मदद खुदा की थी वरना यह काम मुश्किल था ।
हवा के सामने जलता हुआ दीया रखना ।

मैं 'शाद' हूँ मेरी आदत है मुस्कुराने की
मेरा मिज़ाज नहीं दिल बुझा बुझा रखना ।

सहन का बाँट ले दीवार भी उठा लेकिन
दिलों में भाई तू मिलने का रास्ता रखना ।

□

ग़ज़ल

किसी का उजड़ा जहाँ हूँ मुझे तलाश न कर ।
मैं रंजो ग़म का निशाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

तू अपने ऐश की दुनिया सँवार ले लेकिन ।
मैं जैसा और जहाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

हवा में मिलके नज़र भी न आऊँगा एक दिन ।
धुआँ हूँ देख धुआँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

क्यो अपने आपकी तखलीक़ से नही समझा ।
हर एक शै से अयाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

हर एक फूल की खुशबू मेरा मुकद्दर है ।
बहारे-नौ मैं जवाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

बहुत अमीक़ है मफ्हूम का मेरे दरया ।
खुदा का हुस्ने-बयाँ हूँ मुझे तलाश न कर ॥

जो जाके लौटा नही इस जहाँ मे 'शाद कभी ।
मैं एक ऐसा गमा हूँ मुझे त ाश न कर ॥

रेत घड़ी

प्रकाश तातेड़

यथार्थ

एक समागार मे
गाँधी सुभाष
और विवेकानद की
प्रतिमाए रखी हैं
साल दर साल
उन पर
धूल की परत
बढ़ती जा रही है
डर है मुझे
कही एक दिन
ये जीवाश्म न बन जाय
तब जीव वैज्ञानिक
इन्हे लुप्त मान लेगे।
कालान्तर मे
भावी पीढ़ियाँ
पुरातत्व की खोज मे
इन्हे फिर से पा लेगी
और सजा देगी
किसी सग्रहालय मे
फिर से
धूल खाने के लिए।

☐

प्रतिभा सेन

सिगरेट

पहले मुझे सुलगाते हो
फिर खुद जलते हो
मैं तो बुझ जाती हूँ
लेकिन तुम अदर ही अदर
जलते रहते हो ।

□

नारायण कृष्ण

यथास्थिति

एक खूबसूरत दिन की
कर दी है मैंने हत्या
खिला सकता था गुलाब
बुन सकता था सुनहरा ख्वाब
जी सकता था लम्हा-लम्हा
चुन सकता था उदासी
तन्हा खडहर से
लगा सकता था आवाज
क्यो लुभाता ह यह सूनापन
यथा स्थिति का बोध
क्यो नही कर पाता जो करता
जो दर्द दिया तुमने
वह गीत बन सकता था
जो स्नेह दिया तुमने
वह मीत बन सकता था
मगर कदम कदम पर समझौते
करने वाला मन
कुछ न कर सका
पेडुलम सा जीना
अपने लबो का सीना
जाने कितनी पाबन्दिया के घेरो ।
कैसे स्वीकार लेता है
यह मन ।

□

हरिओम कुमार शर्मा

वतन मे

आदमी लोहे की भट्टी मे गलाया जा रहा है
फसले गोदामो मे कैद पड़ी है
और आजादी
राशन कार्ड पर मुफ्त बाँटी जा रही है
भाषण और आश्वासनो की पतवार थामे
अपने वतन मे
गरीबो का उन्मूलन किया जा रहा है

दहेज असतोष
और लालफीताशाही
विज्ञापन का बोर्ड लगाये
दिनो दिन प्रसिद्धि पा रहे है
मजमेबाज डुगडुगी पीटकर
सुर्खियो मे छा रहे है
अपने वतन मे।

रोजगार के अभाव मे
नये पौधे अमरबेल की
शक्लो मे बदलकर
मचो को लुभा रहे हैं
या काले धधो पर सवार होकर
राष्ट्रीय आय घटा रहे हैं।
अपने वतन मे

जनसख्या बढ़ी है अकाल भूकम्प
और मौसम ने
कहर ढाया है।

रेत घड़ी

घाटी का वाशीदा घरो को
छोड़कर सड़को पर लौट आया है
कही कही लोग
सर्दी से मर रहे है
कुछ लोग वीडियो पर ब्ल्यू फिल्मे देखकर
डिस्को कर रहे हैं
अपने वतन मे
कुछ नशे की गोलियाँ लिये
सो रहे हैं
कुछ बाजारो मे खड़े होकर
पेट की भूख से रो रहे है

आगे मै देख रहा हूँ
अधकार के बीच घिरी हुई
एक रोशनी
वृक्षो को रौदती हुई
पागल हाथी की तरह
लपकती चली आ रही है
व्याप्त तम के खिलाफ
अपने वतन मे !

❑

गिरवर प्रसाद बिस्सा

सवाल रहेगे

सदियो से चले आये
सवालो का
ढूढना चाह रहे हम
सही उत्तर
उत्तर की खोज मे
छान डाला हमने
बीहड़ जगल
गुफाओं कदराओं
और समस्त अतरिक्ष को
फिर भी हम खड़े आज
निरुत्तरित
मानव सभ्यता के समक्ष
मौन

कुछ लोग
शायद
दुहाई देगे
विश्व पुनर्जागरण की
परतु
वह तो
बुदबुदा मात्र
समुद्र का
उत्पत्ति से पहले ही अत
नियति थी जिसकी

माना—

हुए थे कुछ मौलिक सुधार
परन्तु
वे भी न रह सके बाकी
सवालो के व्यास से

बीती जाती
सदी बीसवीं
श्रीगणेश होगा
इक्कीसवीं का
फिर भी

सवाल मे ही
आदमी की भूख
अशिक्षा
अनुशासनहीनता
जातीयता
सकीर्णता
और
बढ़ता उन्माद ।

❑

सडको पर

सड़को पर बिछी
खून से लथपथ लाशे

चौराहे है
सब
मौन
उदास चेहरे

अलसाए हुए
डूबते सूरज से

आपस मे
खुसर-फुसर
करते लोग

लाशो को देखते
शिनाख्त करते
हो जाती
तब तक रात

सुवह वही
फिर सड़को पर ।

□

नवनीत राय

भीतर का सच

चेहरा कह देता है
मन के भीतर की
सारी व्यथा-कथा ।

चेहरा देता है गवाही
भीतर के उजास की
कर देता है सकेत
किसी कोने मे दुबके
पीड़ा के अहसास का ।

कही दूर तक
पख फड़फड़ाते हुए
इच्छाओं के आकाश मे
उड़ने को आतुर
मन की गति बता देता है
चुपियाया हुआ चेहरा ।

चेहरा प्रतीक है
तड़ - तड़ कर जलती
दीपक की बाती का
जो बाटकर उजास
सब जग से कह देती है
अपनी व्यथा - कथा ।

बाती के मन मे
चकाचौंध उजाला है
जबकि आदमी के भीतर

कई सवाल जन्माता
प्रपंचों का जाला है ।

चेहरा तोड़ देता है
भीतर का व्यूह
सारे नाते तोड़
कर देता है व्यक्त
भीतर के सारे सच ।

❒

चवल कोठारी

काश ऐसा होता

एक दिन
घर के वाहर
आयी छोटी सी लड़की
मागने लगी रोटी

मेरी वेटी वोली
ये तो मगती है
कितनी गदी है
फटे कपड़े
विखरे वाल
सूखे होठ
पिचके गाल
घर घर
गली - गली
चौराहे पर हो खड़ी
हर किसी से मागती है

मैं सोचने लगी
क्या कहूँ इसे
पेट की आग
मागती है भीख,

मैं वोली
वेटा तुम भी तो
मागती हो

भूख लगने पर
अम्मा से रोटी

यह सुन वह बोली
क्या मा
सारा शहर
इसकी मा है

मै बुदबुदायी
मन ही मन
काश ऐसा होता ।

❐

हरीश कुमार शर्मा

चिड़ियाँ, शेर और ताजमहल

पहले आते थे बार-बार
नि स्वार्थ जन सेवक नेतराम
पीड़ा को सहलाते
खाते थे कसमे
मज़बूरो मज़दूरो के बीच
जान को लड़ाएँगे
कारखाना चलाएँगे।

अब नही आते नेतराम
न कारखाना चलाते हैं
क्योंकि अब वो मत्री हैं।

मजबूर हो मजदूर
किस्मत को कोसते
झेलते मुसीबते
हाथो को जोड़ते
हाजिर हो दरबार मे
ऐसा कुछ पूछते
सुलगेंगे कब चूल्हे हमारे ?
चुभती है त्रिशूल सी
बन्द कारखाने की
खामोश तीन चिमनियाँ।

नेतराम दार्शनिक बन
शुरू हो जाते हैं

चिड़ियाँ वोट नहीं देती
और आप वोटर है
जानते है आप प्रार्थना करना
पर चिड़ियाँ क्या कर ?

आप मे तो है ही सहानुभूति
और है चिड़िया मे भी
बनाया है वाड़ा इमन
दुनिया की चिड़ियो के लिए
क्योंकि जान आपकी हो
या चिड़ियो की
आप स कम नहीं
चलेगा कारखाना
प्रदूषित होगा पर्यावरण
और दु खी हागी बेचारी चिड़ियाँ ।

योग्य जन जीता हे
प्रमाण इसका गीता हे
अत जिएँगे शेर ही
अभय अरण्य म
भले ही जगल फैले
सिकुड़े बस्ती
बहुत बड़ी है यह दुनिया
आप कही और जाकर जी ल
यदि चलेगा कारखाना
पीला होगा ताजमहल
आपके पीले चेहरे सा ।

हम चिन्ता है
आपके साथ साथ
चिड़ियो शेर और ताज महल की ।

पर्यावरण सुरक्षित हो
और हो हम से सरक्षित
जिससे चिड़ियाँ सुरक्षित रहे
शेर जीते रहें
और पीला न हो ताज महल।

ठीक है, नेतराम!
मजबूरा पर गाज गिरे
बना रहे ताज महल।

□

गोपाल प्रसाद मुद्गल

कब बस्ते दिलवाओगे ?

सूरज के जगने से पहले, ये बच्चे जग आते हैं ।
गलियों से ये बीन - बीनकर, चिन्दी तक ले जाते हैं ॥
बिखरे बाल, बुझी हैं आँखें पिचके पिचके गाल हैं ।
ये कंगाली के जाये हैं, भारत माँ के लाल हैं ॥
जिन कपड़ो म सोए थे, उन कपड़ो मे उठ आए हैं ।
दाँतुन - ब्रुश करना क्या जाने, कब मल-मलकर नहाए हैं ?
नही खुशी से डोल रहे थे, नही खुशी से आए हैं ।
नही पीठ पर खाली बोरे खुशियो स लटकाए हैं ॥
नही खुशी से इन ढेरो से, गदी चिंदी बीन रहे ।
नही खुशी स गायो के मुख से, ये चिंदी छीन रहे ॥
अस्पताल के बाहर कुछ, बैठे हैं ताक लगाकर के ।
कब कूड़ा-करकट निकलेगा कब ले जाएँगे भरके ॥
कूड़े - करकट से पाने को कुछ गन्द कागज होंगे ।
पोलीथीन थैलियाँ होगी, कुछ खाली डब्बे होगे ॥
इनका भी पाने के लिए, छीना झपटी भारी है ।
पेट पीठ से लगा हुआ है, यह इनकी लाचारी ह ॥
जितना बोरा भर पाएँगे, उतना ही वे पाएँगे ।
वरना खाली बोरे वाले, भूखे ही सो जाएँगे ॥
ये इनके पढ़ने के दिन हैं खान पीने के दिन हैं ।
इनके अल्हड़पन के दिन है इनके मस्ती के दिन हैं ॥
लेकिन इन्हे नसाब नही है, ये कब पढ़ने जाएँगे ?
लगता ह यौवन से पहले ये चहरे मुरझाएँगे ॥
है यह अजब सवाल कठा कब तक इसको सुलझाओग ?
चिंदी क बोरो के बदले कब बस्ते दिलवाओगे ?

❒

शिव सिंह सुमन

अचानक

अचानक
मचलते रहे उम्र भर,
चाँद को पाने के लिए
अपना हक न छोड़ा
जिंदगी से लड़ते रहे,
घटते बढ़ते रहे साए
नित्य दिन गिनते रहे।
स्मित मुस्कान लिए
अधरो को सजाए रहे
अमिट विश्वास का सबल
अपना आत्मबल जनहित म
सहज ही लुटाते रहे
किये कितने वायदे
जिंदगी को पुसलात
मौत भी तरसती रही
पास आने के लिए
जितना जिस से पाया
दुगना चुकाते रहे।
दुश्मन भी बहल गये
आज अचानक कैसे
बिन लड़े ही हार गये
यह कैसा हठ रहा
रूठकर जाते हुए
अचानक सब सहम गए।

☐

सीताराम व्यास

आदत डाल दो

मौसम भी हुआ
कुछ ऐसा
कही सूखा
कही गीला है
सच कहने वाला
पड़ जाता पीला है
समय अक्सर
खीच जाता रेखाए
साथ न चलने वाला
कही न कही
गिर जाता है

शब्द अटक कर
कर देते है मौन
महत्वाकाक्षा के टीले
इतने वड़े हो जाते है
आदमी वौना हो जाता है
वस अव सभल कर
चलने की आदत डाल दो
ताकि तुम्हारी आदमीयत पर
कोई प्रश्नवाचक चिन्ह न लगे
और विकृतिया का
पुन जन्म न हो।

❐

दीपचन्द सुथार

टूटते सपने

जब मै छोटा था
मा
झूले मे झुलाती हुई
आकाँक्षाओं से रगी
सुमधुर स्वर से
लोरियाँ सुनाती

रोता तो
अपने सुख दु ख को भूल
गोदी म लेकर
चदामामा दिखलाती

ठुमक ठुमक चलने लगा
तो चाँद सितारो आदि की
अनेक आ भुत कथाएँ सुनाती
जो हृदयस्थ होती गई
धीरे - धीरे
सोपान
गवेषणा के बनती गई

क्षण क्षण के महीन धागो से
जीवन बुनता गया
हर मोड़ पर
विभिन्न रगा से रगता
स्वप्न सँवारता गया
जिसकी हल्की-सी याद
इन्द्रधनुषी रग लिये

कभी - कभी
अनायास उभर आती है
तो लम्बी श्वास लेता
सिर का
हाथो की उँगलिया पर
टिका देता हूँ

फिर घटो सोचता हूँ
चाँद की वाते नही
सिर्फ
नमक, मिर्च, लकड़ी की वाते
जिसम छिप गया है
चाँद
दिखाई दे रहे है
तारे
वे भी
निशा म नही
दिवस म ।

दीपचन्द सुथार

टूटते सपने

जब मैं छोटा था
मा
झूले मे झुलाती हुई
आकाँक्षाओं से रगी
सुमधुर स्वर से
लोरियाँ सुनाती

रोता तो
अपने सुख दु ख को भूल
गोदी म लेकर
चदामामा दिखलाती

ठुमक ठुमक चलने लगा
तो चाँद सितारो आदि की
अनेक अद्भुत कथाएँ सुनाती
जो हृदयस्थ होती गई
धीरे - धीरे
सोपान
गवेषणा के बनती गईं

क्षण क्षण के महीन धागो से
जीवन बुनता गया
हर मोड़ पर
विभिन्न रगो से रगता
स्वप्न सँवारता गया
जिसकी हल्की सी याद
इन्द्रधनुषी रग लिये

कभी - कभी
अनायास उभर आती है
तो लम्बी श्वास लेता
सिर का
हाथो की उँगलियो पर
टिका देता हूँ

फिर घटो सोचता हूँ
चाँद की बाते नही
सिर्फ
नमक, मिर्च, लकड़ी की बाते
जिसमे छिप गया है
चाँद
दिखाई दे रहे हैं
तारे
वे भी
निशा म नहीं
दिवस मे ।

❒

रामनिवास सोनी

दर्द की चुभन

मत छेड़ो दर्द को
इसकी चुभन
मेरी जिदगी का
वेहतरीन हिस्सा है।

दर्द तो अपना है
बाँटा नही जाता
भोगा जाता है।
इतिहास की सलवटो मे
वक्त के मासूम धागा म
जिन्दगी की कतरना मे
सजोया है
हीर कनी सा
चमकता दर्द।
अगूठी मे जड़ा
इठलाया है
नगीने सा।

मानव की अदम्य चेतना मे
सवेग भरता
गीतो मे ढलकर
नयनो मे पलकर
मोम सा पिघल कर
वहता निर्झर सा
अविराम।
वनाता पहचान
अपने पराया की।

पाया है
खुशियो के बदले
गले लगाया है
हार समझकर।
वही तो पूजी है
जीवन भर की
विरासत है
थाती है
युग बोध की।

मेरे निर्माण का सबल
मेरा दर्द
आवाज का प्रहरी
मेरा दर्द
विकास की मजिल
मेरा दर्द।

सभी छोड़ कर
भले ही चले जाँय
मगर
मेरा इसका रिश्ता नाता
पुराना है।
यही तो आसव है
अमृतमयी
जिजीविषा का।
मेरा हर पल सँवारने
मृत्युजयी बनाने मे
इसी का सहारा है
एक मात्र।

शिकवा क्या
क्या

रामनिवास सोनी

दर्द की चुभन

मत छेड़ो दर्द को
इसकी चुभन
मेरी जिदगी का
बेहतरीन हिस्सा है।

दर्द तो अपना है
बाँटा नही जाता
भोगा जाता है।
इतिहास की सलवटो मे
वक्त के मासूम धागा मे
जिन्दगी की कतरनो मे
सजोया है
हीर कनी सा
चमकता दर्द।
अगूठी मे जड़ा
इठलाया है
नगीने सा।

मानव की अदम्य चेतना मे
सवेग भरता
गीतो मे ढलकर
नयना मे पलकर
मोम सा पिघल कर
बहता निर्झर सा
अविराम।
बनाता पहचान
अपने पराया की।

पाया है
खुशियो के बदले
गले लगाया है
हार समझकर।
वही तो पूजी है
जीवन भर की
विरासत है
थाती है
युग बोध की।

मेरे निर्माण का सबल
मेरा दर्द
आवाज का प्रहरी
मेरा दर्द
विकास की मजिल
मेरा दर्द।

सभी छोड़ कर
भले ही चले जाँय
मगर
मेरा इसका रिश्ता नाता
पुराना है।
यही तो आसव है
अमृतमयी
जिजीविषा का।
मेरा हर पल सँवारने
मृत्युजयी बनाने मे
इसी का सहारा है
एक मात्र।

इसमे शिकवा क्या
गिला क्या

यही अनुभूति है
साकार
मेरे अस्तित्व की।

इसके बगैर
जीने की कल्पना
सचमुच बेमानी है
क्योंकि
यही मेरा भोजन है
पानी है।

❐

हनुमान दीक्षित

नही आया कोई अन्तर

वर्षों पहले
युवा आँखो ने
बिन ऐनक
साफ साफ देखा था
गोरी सत्ता की
चक्की मे
गुलाम अवाम
पिस रहा है ।

आज वही
बूढ़ी आँखे
ऐनक लगा
साफ देख रही है
उसी चक्की मे
उसी तरह
आजाद अवाम
पिस रहा है ।

❒

जितेंद्र

मेरा द्वार खुला रहने दो

सुख गहने के लिए यदि मैं समुत्सुक हूँ
तो दुख सहने के लिए भी मुझे प्रस्तुत रहना है
मेरा द्वार खुला रहने दो

वर्जना के स्वरा
तुम्हारा यह कथ्य सत्य है कि
द्वार बद पायेगा तो
तूफान स्वय लौट जाएगा
पर यह सत्य अधूरा है
कोई कोलाहल से त्रस्त हो
शरण के लिए मेरे द्वार पर दस्तक देगा
और उसे बद पाकर हताश लौट जाएगा
मेरे द्वार पर से कोई यो लौट जाए
और मै बना रहूँ - यह तो नही होगा
तुम मेरे द्वार को अवरुद्ध मत करा
मेरा द्वार खुला रहने दो
द्वार बद करने से कोलाहल तो नही मिटेगा
मिटेगा मेरा यह आत्मविश्वास कि
मैं असुर से सघर्ष ले सकता हूँ
कोलाहल को ललकारने मुझे बाहर जाना है
उसकी चुनौती मैं बद द्वार की ओट से सुनू और सहूँ
यह कैसे सभव होगा ?
आधी और तूफान से अपनी रक्षा का मूल्य
मैं रूप और गध से वचित होकर नही चुकाना चाहता
तुम मुझे अपने स्वप्न जाल मे बदी न करो
मेरा द्वार खुला रहने दो ।

जगदीश सुदामा

मिजाज सामंती

सजाएँ और बढ़ा दो
हुकुम बजाते रहे
कुटी मे आग लगा दो
हरम सजाते रहे
उनके कपड़ो को फाड़ डालो
तार तार करो
उजली चादरे बिस्तर पे
हम बिछाते रहे
तमाम खुशियां छीन कर
हमारे नाम करो
हंसी को उम्र-भर तरसे
गम उठाते रहे
ऐसी जंजीरे डाल दो
हाथ पाँवो मे
पुतलियो को उंगलियो पे
हम नचाते रहे
उनके खलिहान लूट लो
उजाड़ो खेतो को
हमारा हुक्का भरे वे
चिलम जलाते रहे
कभी बदला है न बदलेगा
मिजाज सामंती
कि हुकमअदूली के सर को
कलम कराते रहे।

□

किशोर करुण

आदमी वैसाखियो पर

आजकल हर आदमी
वैसाखियो पर चलता है
अपनी लाश
स्वय के कधा पर ढोता है।

नग पावा गर्म सड़को क तवा पर
दौड़ता है सरपट
आदमी तागे म जुता हुआ
परिवार की सवारियाँ लादे।

क्षितिज के उस पार
नीली छतरी वाला भी
पूरा हिसाब रखता है
आदमी की गतिविधियो का।

खिड़किया से टुकुर टुकुर ताकते
चिड़ियाओं के बच्चे भी
गर्भस्थ शिशु की किलकारिया सुनकर
छिप जाते है हनुमान जी की तस्वीर के पीछे।

अजन्मे शिशु की
किलकारिया
भविष्य का दिशा बोध
काप जाता है पिता भी
इनकम या दहेज
अगुलियो पर गिनता है आकड़े
और छटपटाता है
छिपकली सी कटी पूछ सा।

अतिम दौर मे आदमी
कपड़ा की सलवटो, झुर्रियो,
फटी बिवाई की जुराबे
पहन लेता है
शरीर पर ठसा - ठस,
और भीड़ मे बिखर जाता है
कपड़े खूटियो पर ही टगे रह जाते है
उसके इतजार मे ।

❐

किशोर करुण

आदमी वैसाखियो पर

आजकल हर आदमी
वैसाखियो पर चलता है
अपनी लाश
स्वय के कधा पर ढोता है ।

नग पावा गर्म सड़का के तवा पर
दौड़ता है सरपट
आदमी तागे मे जुता हुआ
परिवार की सवारियाँ लादे ।

क्षितिज के उस पार
नीली छतरी वाला भी
पूरा हिसाब रखता है
आदमी की गतिविधियो का ।

खिड़कियो से टुकुर टुकुर ताकते
चिड़ियाओं के बच्चे भी
गर्भस्थ शिशु की किलकारिया सुनकर
छिप जाते है हनुमान जी की तस्वीर के पीछे ।

अजन्मे शिशु की
किलकारिया
भविष्य का दिशा - बोध `
काप जाता है पिता भी
इनकम या दहेज
अगुलियो पर गिनता है आकड़े
और छटपटाता है
छिपकली सी कटी पूछ सा ।

लोकेश झा

बेवसी

हो रहा पतझर
हमारे सामने
हम देखते है
निर्वसन सब वृक्ष है ।
मामने हम देखते है ।

अब न पिहके मोर,
ना ही कूकती कोयल यहाँ पर
डाल पर वैठी उलूके
सामने हम देखते है ।

उठ गई रौनक
गाँव की मढ़ पर मेले लगे जो
अधमिटे पायल निशा
सामने हम देखते है ।

खिलखिलाहट यौवनाओं की
हुई गुम
आँचलो मे अश्क झर झर,
सामने हम देखते है ।

मुश्किले होती
बिठाते डोली मे
अपनी ही वेटी
भस्म होती ज्वाल मे
सामने हम देखते है ।

एक अनजानी, भयानक
बेवसी है।
चुप जुबा, आँखे फटी सी
सामने हम देखते है।

क्रूर निर्मम, हाथ ने मारा
झपट्टा
दूर तक फैला मरुस्थल
सामने हम देखते है।

❐

लोकेश झा

बेबसी

हो रहा पतझर
हमारे सामने
हम देखते है
निर्वसन सब वृक्ष है ।
सामने हम देखते है ।

अब न पिहके मोर,
ना ही कूकती कोयल यहाँ पर
डाल पर बैठी उलूके
सामने हम देखते है ।

उठ गई रौनक
गाँव की मेढ़ पर मेले लगे जो
अधमिटे पायल निशा
सामने हम देखते हैं ।

खिलखिलाहट यौवनाओं की
हुई गुम
आँचला म अश्क झर झर
सामने हम देखते हैं ।

मुश्किल हाती
बिठाने डोली म
अपनी ही बेटी
भस्म होती ज्वाल म
सामने हम देखते हैं ।

थक कर छिपा लेना चाहता है वह
शुतरमुर्ग की तरह रेत मे गर्दन
पर इससे पहले ही
रेत मे से उग आते है
कुछ काटे कुछ पलाश, कुछ गुलाब।

उसे भागना है फिर से
जीवन और मृत्यु के बीच।

❐

जगदीश जोशी

रेत के गुलाब

घरवाली की सितारे जड़ी ओढ़नी
बच्चे के डोलर पर झूलने के ख्वाब
और महनतकश हाथो से चुए श्वेद कणो का मोल
दबे है सब खलिहान के ढेर तले
जिस पर बैठा है
सघर्ष और शोपण की गुलाम डाली मे अटके हुए
सूद दर सूद बढ़ते जाते
पीढ़ियो से भी लम्बे खाता का नियता ।

मन की कुलबुलाहट पर अधे सामाजिक दायित्वो का ताला
पीठ पर गरुड़ - पुराण के यमदूतो की मार
जिज्ञासाओं पर शबूक वध सी कथाओं से भरे
पुराणो का बोझ लिये
वह नदी के कछार की रेत मे सोने के कण ढूढ़ता है ।
झाकना चाहती हैं
सूरज की कुछ किरणे
उसके छप्पर मे
पर लील लेता है बादलो का झुड
उन्हे आसमान मे ही ।

भागता जाता है वह
भटकता अटकता लड़खड़ाता
पोटली मे बधी ज्वार की दो रोटियो और एक प्याज
के जोर पर
भाग्य के चक्के को पकड़ने के लिए
उम्र भर ।

थक कर छिपा लेना चाहता है वह
शुतरमुर्ग की तरह रेत मे गर्दन
पर इससे पहले ही
रेत मे से उग आते है
कुछ काटे कुछ पलाश कुछ गुलाव ।

उसे भागना है फिर से
जीवन और मृत्यु के वीच ।

❐

राजकमल खटाना

तस्वीर

कैमरे की क्लिक के बाद
तस्वीर मे उभर आता है
आतरिक अधकार पर बाहरी प्रकाश
नीचे लिजलिजी जमीन
ऊपर खोखला आकाश
और इनके बीच
सर के बल खड़ा व्यक्ति उदास हताश ।

जगल सा उगा असतुलित शहर
जिसमे रिसता है
विकृत सस्कृति खोखली मान्यताओं
और विकलाग व्यवस्था का जहर ।
बार - बार के प्रयलो के बावजूद
नीले नभ तले उन्मुक्त धरती
धरती पर खिलते सम्पूर्ण शहर के
प्रकाशवान मनुष्य की तस्वीर
क्यो नही उभरती ?
कैमरा अनुकृति ही बाहर लायेगा ?
चाह कर भी
सौम्य सुन्दर नही रच पायेगा ?

❑

दिनेश चद्र श्रीमाल

कर दो हरा भरा

गैस का चूल्हा
जब से आया है
मेरे घर मे

लकड़िया ढूढे न मिलती,
सिगड़िया ताक मे चढ़ गईं
न हाथ होते काले,
न निकले धुएँ काले,

सब कुछ साफ
हवा घर रसोई
सारा पर्यावरण
कैसा सुनहरा जाल है ?

मै प्रसन्न
वह प्रसन्न
सारा जहाँ प्रसन्न

पर
पेड़ रोये
पौधे रोये
जगल रोये

मुझ पर
तुम पर
सब पर

डूगर सिंह राजपुरोहित

दरार

दरार है लोक परलोक मे,
दरार है स्वर्ग नरक मे ॥

दरार है धर्म अधर्म म
दरार है शर्म बेशर्म म ॥

दरार है मान, अपमान म
दरार है ईमान बईमान मे ॥

दरार है श्वास समीर म
दरार है गरीब अमीर मे ॥

दरार है नेता अभिनेता मे
दरार है क्रेता विक्रेता मे ॥

दरार है ट्यूटर, टीचर मे
दरार है पोस्टर पिक्चर मे ॥

दरार है जीवन मरण मे,
दरार है कथन प्रण मे ॥

□

भोगीलाल पाटीदार

दुल्हन बिकेगी

समय हर मर्ज की दवा है
अर्वाचीन को प्राचीन कर देता है
न कोई शाश्वत है न स्थिर।

मेरे पिता ने कहा था
उनकी शादी सादगी से हुई थी
बचपन मे निपट गई थी
लेन देन का सौदा नही
आडम्बर और दिखावा नही।

एक पीढ़ी गुजर गई
समय ने जलवा दिखाया
दूल्हा बिकने लगा
बोली पर बोली लगने लगी।

मुझे भी
लड़की के पिता के हाथो बेचा
मन भरकर धन खीचा
वे अभी तक मेरा घर चला रहे
बेटी के लिए अपना घर जला रहे।

आज मै
अपनी तीसरी सतान
पाँच वर्षीय पुत्र के लिए चिंतित हूँ
औरतो पर होते जुल्म
भ्रूण परीक्षण हत्याएँ और
पुत्र जिजीविषा ने

कम कर दी हैं कन्याएँ
कैसे प्रकृति करेगी न्याय

सोचता हूँ समय
बेटी के बाप को करेगा सबल
बेटे का बाप होगा निर्बल
दूल्हे के स्थान पर
दुल्हन बिकेगी।

□

अनवर अली

सभ्यता और हम

सभ्यता समाज का दूसरा रूप है
एकता जिसकी आत्मा है,
जो समेटे हुए है
फूल कई रगो के अपनी झोली मे
समाज हमे देता है, जीने का एक लक्ष्य ।
दु ख समाज को तब होता है
जब टूटने लगती है वह माला
जिसे पिरोता है समाज,
बार - बार एकता की नाजुक डोर से,
बिखरने लगते है वो फूल,
जिन्हे सदियो से सजाता आ रहा है,
समाज अपने आगन मे ।
समझ नही पाता है कोई
समाज का वह दर्द,
डूब जाती है अपनी चीत्कारे
अपने ही कोलाहल मे,
अठखेलियो को किए कैद
सहम जाता है तब समाज ।

❒

अरविंद चूरुवी

गजल

पुस्तक प्रेमियो का प्रेम पत्र है किताव
यत्र है, तत्र है सर्वत्र है किताव ।

अज्ञानता के प्रेत से लड़ने के लिए दोस्त !
धरती पर देवोपम शस्त्र है किताव ।

इस धरती पर है काले अक्षरो का राज
दुनिया का सम्राट एक छत्र है किताब

अज्ञान जन्य भय से मुक्ति का दाता
शीतलता भरा चद्र सा नक्षत्र है किताब ।

चित्रगुप्त की वही, है पोपा का लेख
हर घड़ी, हर पल का तिथिपत्र है किताव ।

वो जगह काशी, कावा और येरूशलम है
अरविंद' जहा पर कि एकत्र है किताव ।

☐

राजेंद्र कविराज

कौन है

पाच किलो के तन पर
डाले दस किलो का बोझ
जो चला आ रहा
वह कौन है
छोटी सी आखो पे
लगा मोटा सा चश्मा
जो जा रहा है
कौन है
छोटी सी अगुली मे डाले
बड़ा सा पेन
जो लिखे जा रहा
वह कौन है
अजाने डर से
जो बढ़ाये जा रहा
धड़कने दिल की
वह कौन है
छोटे से दिमाग से
ढूढ़ने एक बड़ा हल
जो जूझ रहा
वह कौन है
भूल कर अपने भविष्य को
भविष्य देश का
जो बना रहा
वह कौन है ।

☐

रमेश भारद्वाज

दीवारे

दीवारे ही दीवारे,
चारो ओर
चमकदार
दृढ़ दीवारे
मानो हीरे की हो।
आकर्षक और
बाँध रखने वाली दीवारे।

रही है इस देश मे
सदियो से दीवारे।
भाई से भाई को
पड़ौसी से पड़ौसी को
अलगाने वाली दीवारे।
पति से पत्नी को,
माँ से बेटे को
पिता से पुत्र को
भाई से बहिनो को
अलग रखने वाली दीवारे।

यह नही कि इन्हे तोड़ने
कोई उठा नही
हर युग मे
हर शासन मे
हर क्षेत्र म
साहमी
आगे आये।

वाणी के हथौड़े
चलाये
कर्म का कुठार चलाया ।
हाथ छिल छिल गय
खून रिस रिस गया ।

खेद कि ढहने वाले ढह गये
दीवारें वैसी ही हैं
वे और बढ़ गयी है
और मजबूत हो गयी है ।
मनुज फिर उठ रहा है
इन्हे गिराने
न दीवार गिरती है
न मानव हारता है ।

❐

भगवती लाल शर्मा

तबादला

गाव के बाहर
स्कूल के पास
मदिर के सामने
जो नही होना चाहिए था
हो गया था
एक कुत्ता मर गया था

मास्टर ने कहा गाव से
गाव ने कहा मास्टर से
कहते रहे सुनते रहे
ढोल होता गया कुत्ता
सड़ता रहा कुत्ता
फूट कर बिखर गया कुत्ता
बदबू बन
घर घर मे घुस गया कुत्ता

एक ने दूसरे को
दूसरे ने तीसरे को
कोसा गालिया दी
आखिर गाव इकट्ठा हुआ
यह किसका कसूर हुआ ?
मास्टर ने कुत्ते को भगाया नही
मास्टर ऐसा चाहिए नही

रिपोर्ट हुई
पूछताछ हुई।
मास्टर की गलती साबित हुई
कर दिया तबादला

गाव की हवा फिर साफ हुई
गलियो मे फिर बात हुई
एक गदी हवा ने गाव को जगा दिया

मरे कुत्ते को नही फिकवा सके
जीवित मास्टर को मगर फिकवा दिया

❑

हरीशचद्र उपाध्याय

शर-शैया

शर शैया पर लेट कर,
मृत्यु की प्रतीक्षा केवल,
भीष्म ने ही नही की

आज भी करती है
असख्य नव वधुए
दहेज के अभाव मे,
सासो के व्यग्य बाणो की
शैया पर लेट कर ।

❏

भागीरथ भार्गव

मेरी धरती

जब माटी से उठने लगती है
सौंधी सौंधी अनूठी गध
जब बरसात की रिमझिम से
हरिया उठता है धौक बन
चट्टानो घाटियो व पर्वतो के शिखर
मोहक हरीतिमा से भर उठते है
जब पीली चूनर ओढ़
इठलाने लगती है वसुधरा ।
जब अनेक-अनेक स्रोतो से
फूटने लगते है
दूधिया फेनिल झरने
ऐसे मे तब फूट पड़ता है
प्रकृति का अद्‌भुत लावण्य ।
तब मन कुलाँचे भरने लगता है
हर दिशाओं मे
मै भूलने लगता हूँ सब अवसाद
विगत के मारक चित्र, दुखद स्मृतियाँ
कुटिल ऋतुएँ
और एक अनूठे उल्लास, उमग व
अटूट स्वरो मे गा उठता हूँ-
यह धरती मेरी है
इस धरती का मै हूँ
तब अपने "मैं" को तिरोहित कर
मैं धरती का उस माटी का
जो सिर्फ मेरी है - सिर्फ मेरी ।

❑

रविदत्त पालीवाल

नाम उस नदी के

सिंचित कर मेघ जो
वस्त्र देता कापला का
नाम उस नदी के,

श्रृंगार बन बौर जो
गन्ध बन वसंत का
नाम उस नदी के,

स्वाद बन फलों में जो
टपका है अनवरत
नाम उस नदी के,

दे दान श्वास का जो
पाथेय बना जीवन का
नाम उस नदी के

समिधा बन निजत्व का जो
ऋचाएँ गा-गाकर
नाम उस नदी के।

□

मगरचद्र दवे

एक स्थिति सवेदनहीन

कैसी सवेदनहीनता मे
पहुँच गया है मेरा देश
वलात्कारी, खूनी काला वाजारी
घूमते हैं खुले आम वेखौफ
कानून न्याय की धज्जियाँ उड़ाते हुए
बीसियो निरपराध
गोलियो से भून दिए जाते है,
दहेज के लोभ मे,
जिदा महिलाएँ जला दी जाती है
वच्चे दफन कर दिए जाते है
हम आये दिन अखवारो की सुर्खियाँ पढ़ते हैं,
टी वी पर देखते हैं,
रेडियो पर सुनते है

हम एक वीतरागी की तरह
एक कान से सुनकर,
दूसरे कान से इस तरह निकाल देते है-
मानो कुछ न हुआ हो
आदमी की मौत
एक क्षण के लिए भी
नही झकझोर पाती
हमारे सभ्य चिंतन-मनन को।

□

स्वर्णकाता मङ्गला

आतरिक मूल्याकन

जीवन के इस
घटना प्रपत्र म
अल्प विराम लगा दो
प्रिय
इस स्वचालित जीवन म
कुछ
अपनी गति मिला दो ।
करे हम
अपना ही
आतरिक मूल्याकन
प्रिय बैठो ।
तनिक
हमारे पास
करे हम
आज ही
अपना अतर्ज्ञान ।

व्यस्त है वहुत
चिंतित भी कम नही
आलोचना प्रत्यालोचना से
टूट रहे
क्यो हो रहे
हम तार-तार ।

वन बैठे अव तो हम
एक अपठित गद्याश
अनजान है हम ।

फिर भी पढ़ रहे है लोग हम
बार-बार।
मुख्याशो को रेखाकित कर
दिये जाते है शीर्षक
अपने-अपने मतानुसार।
बनना है हमे
सधि शब्द
विच्छेद विग्रह का
स्थान नही
तोड़ना नही जोड़ना है
वाक्य बनाना
फिर बने
गद्य या पद्य
नयी रचना करना है।

❐

मीठालाल खत्री

अंतिम सीढ़ी का दर्द

अब घर के आगन मे
खूटे से नही बधती
आम चौराहे पर
नीम के नीचे पड़ी रहती हू
अब हरा चारा तो क्या,
सूखी घास भी नसीब नही

देह की अशक्तता
अनवरत बढ़ती जा रही है
और भीतर की पीड़ा
आखो से नदी की तरह
बहती हुई
मिट्टी मे समा जाती है

आदमी कितना स्वार्थी है।
दूध देती थी तब,
सबकी निगाहो मे मेरी कीमत थी
और अब दूध सूख जाने के बाद
उपेक्षित-अनुपयोगी समझ
कचरे की तरह घर से बाहर
जैसे किसी कूड़ेदान मे डाल दिया है

□

गुलाम मोहम्मद

अविरल युद्ध

रात भर
अधकार से युद्ध करता
रक्त रजित हो
विजयी सूरज निकला
उजाले के साथ
सवेरा होने का
सुखद समाचार लेकर ।
पक्षी चहके
बगिया महकी,
दुनिया जागी,
प्रकृति ने अगडाई ली ।
सूरज के जख्म भर गये ।
मस्तक पर
विजय की आभा लिये सूरज,
तय करता रहा अपना सफर ।
समय बीता
साझ आई
अवसर पाकर
अधकार ने फिर किया
सूरज पर आक्रमण ।
एक बार फिर
सूरज रक्त रजित हो गया ।।
अधकार और

रोशनी के दरमियान
जंग अब भी जारी है,
यह अविरल युद्ध कब तक चलेगा ?
कोई नहीं जानता !
विजय किसकी होगी ?
कहा नहीं जा सकता !

□

ब्रजमोहन द्विवेदी

फागुन बीत गये

मै
सिर्फ देह नही हू
तुम
मानती रही हो
देह
स्वय को
और
तलाशती रही हो
देह मुझ मे
मै
ढूँढ़ता रहा
तुमको
अतरग मे,
हमारी
आकाक्षाए
क्षितिज बनकर
मडराती रही
जीवन के
हर मोड़ पर
इस तरह
सावन भादौ
तो
रीते ही
फागुन बीत गये

❐

शारदा शर्मा

चरित्र

चरित्र ?
चरित्र कोई चाय का चमच नहीं है
चीनी एक या दो ।
बात को समझिए
हड़बड़ी नहीं ।
तो उद्वेलित मानसिकता पर
छींटे न मारे
जिसकी मुझे आवश्यकता नहीं है ।
यह हो
पर मेरे लिए क्यों ?
फिर
यह कैसी अपेक्षा है ?
सम्मति के लिए समिति
तो विसम्मति क्या है ?
क्या चाहते है
सर्व सम्मति क्या
इस रस्मी कवायद को रोकेगे ?
नही तो ।
असतोप को पीना और जीना
शिव कहलाने के लिए
कैमा है यह चरित्र ।
जो चलता रिरियाता है
फिर
त्रस्त करता है किसको किसके लिए

क्या यह बपौती है ?
हिमायती होना उसके लिए गौरव है ?
चरित्र की कैफियत मे दो चरित्र पत्र
धरातली चरित्र।
सूखे ठूठ सा वाक्य
'टू द बेस्ट ऑफ माई नॉलेज
बुहारी स्वय को क्या बुहारे
अव्यक्त से व्यक्त चरित्र
साधो चरित्र नाहि दस वीस।

❐

रूप सिंह राठौर

उल्टा पासा

हुआ टूक टूक
विखण्डित जीवन
बदल चुकी उसकी परिभाषा
सोच समझ कर
फका था पर
पड़ना ही था उल्टा पासा।

□

भोगीलाल पाटीदार

पीड़ा

वृद्धी आँख
अखबार मे गड़ी थी
डैनी बोला–दादा
बापू का फोटो देखते हो ?
आपका कब छपेगा ।
आप भी तो स्वराज्य के लिए
जेल गये थे
जेल वाली कहानी सुनाओ न !
थकी पलके ऊपर उठी
होठ फड़फड़ाकर रह गये ।
अखबार स्याही से नही
रक्त धब्बो से सना था
हड़ताल, हत्याएँ कर्फ्यू और
बलात्कार से भरा पड़ा था
जिसके लिए यातनाएँ और
अत्याचार सहे
वे सब स्वप्निल हो के रह गये
हम आजाद है यह कहने
लायक कहाँ रहे ?
अर्थ ही बदल कर रख दिया
आज-आदी हो गये है
भाषा धर्म, जातिवाद के
इस व्यूहचक्र मे
हर आदमी मे भय भर दिया
पहले अंग्रेजो का डर था

अब अपनों ही का
शहीद भी आज आ जाये तो
अपनी शहादत पर पछताये
हाठ फिर खुल-बैठा
धागे की कविता याद करो
फिर
जल की कहानी सुनाऊगा।

□

राजकमल खटाना

अब कहाँ ढूँढे

अब कहाँ ढूँढे
अछूती लाज का पानी कहाँ ?
चुक गया क्यो
सस्कृति के साज का पानी यहाँ ?
वचनाओं के
भयावह व्यूह मे भरमा गये,
थी बाँटनी सौगात खुशियो की
पहरुए खा गये ,
हा गये बदरग
पीकर राज का पानी कहाँ !

चेतना अचेत सोई
जग चिन्तन को लगी,
तृप्त होगी वक्त की
कब रक्त की तृष्णा जगी ?
केवल कहानी रह गयी
मुमताज का पानी यहाँ !

वर्ग वृत-खाँचे बना कर
दायरो मे बँट गया
और तो क्या
आदमी ही आदमी से कट गया !
जोड़ पाता है दिलो को
आज का पानी कहाँ ?

हम गये जिसे ठौर म भी
सब जगह यह दौर है
आदमी ही आदमी के हेतु
आदमखोर है ।
दोस्त बोले—कवि ।
गया आवाज का पानी कहाँ

□

मणि बावरा

हाँ, वह शहशाह है

साँस लेता है वह
ताजी हवाओं मे
और सुनाता है खनकता
पहाड़ी चश्मे का सुमधुर सगीत
हाँ वह शहशाह है
चुहचुहा आता है पसीना
फिर भी हाथों मे हल
और खींचता ही चला जाता है
धरती पर लकीरे
यह सोचकर कि
यही तो है
उसके भाग्य की लकीर
हाँ वह शहशाह है
खेतो का शहशाह है
खजूरो का लम्बे पेड़
चवर डुलाते है
लहर-लहर लहराती
ईर्द गिर्द पहाड़ियाँ
जैसे दास दासिया
मक्का बाजरा
बजरी की रोटी
मिर्च प्याज
भाप मे जो मिला वह साग

खाता है
और मस्ती से
मानसून से चौसर खेलता है
हारता है
टूटता है
फिर भी गुनगुनाता है।

□

सीताराम व्यास

क्षणिकाए

आडबर

पडित उड़ाये
मालपुये खीर
हम रोये
पेट की पीर ।

गति

आवागमन
के साधनो की तरह
वक्त गुजर जाता है
और साइन बोर्ड की तरह
मैं टगा रह जाता हूँ ।

□

अशोक पन्त

जीना महज इत्तिफाक

रात डरावने सपनो का डेरा
दिन सुलगते विचारो का गोदाम
आम आदमी के आस पास
किसी तूफान के
आने के पूर्व का अहसास
जब दस्तक दे दरवाजे पर
कोई घड़ी दर्दनाक
तब उसे
लगता है
जिस्म एक मजबूरी
और
जीना महज इत्तिफाक ।

❑

सम्पर्क सूत्र

- ओम पुरोहित 'कागद' 24 दुर्गा कॉलोनी हनुमानगढ़ सगम 335512
- सत्य नारायण सोनी रा प्रा वि, रामगढ़ तह नोहर जिला श्री गगानगर
- भरत सिंह ओला रा विद्यालय, परलीका तह नोहर श्रीगगानगर
- नमोनाथ अवस्थी रा उ प्रा वि डौरावली (टोडाभीम) सवाई माधोपुर
- मालचन्द्र शर्मा सहायक निदेशक, शिक्षाकर्मी बोर्ड, सीकर हाउस जयपुर
- दीनदयाल शर्मा पु अ रा मा वि, हनुमानगढ़ सगम (श्रीगगानगर)
- सुरेश हिन्दुस्तानी अनौपचारिक शिक्षा जिला परिषद बीकानेर
- पुष्पलता कश्यप पुष्पाजली भवन, पुराने जे सी ओ मैस के पीछे लक्ष्मीनगर जोधपुर
- उषा किरण जैन प्र अ अतिशय क्षेत्र, बाड़ा पदमपुरा जयपुर
- मुख्तार टोंकी काली पलटन रोड़ पुल मोहम्मद खा टाक
- राधेश्याम अटल 81 बाल मदिर कॉलोनी मान टाऊन सवाई माधोपुर
- इस्हाक आलम रा उ प्रा वि रामपुरा (सिरोही)
- भगवती लाल व्यास 35 खारोल कॉलोनी, फतहपुरा उदयपुर
- दिनेश विजयवर्गीय मार्ग 4 215 रजतगृह कॉलोनी बूंदी
- मायामृग किराना भवन मार्ग हनुमानगढ़ टाऊन
- महेन्द्र आचार्य पुत्र हनुमान दास आचार्य, एडवोकेट बीकानेर आइस फैक्ट्री के पास रानी बाजार बीकानेर
- मीठेश निर्मोही आगूच उम्मेद चौक जोधपुर
- राधेश्याम शर्मा मु पा आवली कला जिला - झालावाड़ 326502
- शकुन्तला गौड़ IV/2 पी डब्ल्यू डी कॉलोनी सिरोही

- अशोक कुमार दवे राजस्थान स्टेट भारत स्काउट व गाइड, जवाहर लाल नेहरू नगर जयपुर
- बजरंग लाल जेठू व्या राज सी उ मा वि जसवन्तगढ़ (नागौर)
- राजकुमार तिवारी व अ जौहरी रा उ मा वि, लाडनूँ 341306
- अरविन्द तिवारी राज सीनियर उ मा वि, कुचामन सिटी, 341508
- मणिबावरा राज नगर सीनियर उ मा वि बाँसवाड़ा
- दशरथ कुमार शर्मा प्र अ 656/27, तेलीवाली गली रामगज, अजमेर
- वासुदेव चतुर्वेदी प्रकाशन अनुभाग एस आई ई आर टी उदयपुर
- रतन राहगीर अध्यापक राज प्राथ विद्यालय आड़सर बास, श्री डूँगरगढ़
- श्याम मनोहर व्यास जि शि अ, 15 पचवटी, उदयपुर
- विश्वनाथ भाटी गणपति नगर वार्ड न 4 पो तारानगर 331304
- राधेश्याम सरावगी चारभुजा जि राजसमन्द 313333
- चैनराम शर्मा मु पो चन्देभग वाया खेमली जिला - उदयपुर
- पुरुषोत्तम 10 घाणेराव की घाटी उदयपुर
- नन्द किशोर व अ राज मा वि सिहपुर जि चित्तौड़गढ़
- करुणा श्रीवास्तव एल 76 हिम्मतनगर, टोंक रोड, जयपुर
- हरेन्द्र कुमार त्यागी इन्दोरिया पब्लिक स्कूल, नवलगढ़ जि झुझुनू
- प्रेम प्रकाश व्यास प्र अ रा मा वि जसाई जि बाड़मेर
- निशान्त वार्ड न 14 निकट वन विभाग पीलीबगा, गगानगर
- कन्हैयालाल भाटी कुनीनिवास, गगाशहर रोड़, बीकानेर
- अरनी राबर्ट्स पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगज मण्डी कोटा-324002
- जितेन्द्र शकर बजाड़ मु पो भीचोर, जिला चित्तौड़गढ़
- सत्य शकुन हनुमान हत्था, बीकानेर
- अजना जगदीश माथुर के आर डब्ल्यू 20 वाटर वर्क्स कॉलोनी कोटा-9
- करणीदान बारहठ फेफाना जिला श्री गगानगर
- अशोक पन्त सेठ दाऊदयाल रा मा वि चिकसाना जिला भरतपुर
- रमेश मयक : प्र अ रा मा वि नगरी जिला - चित्तौड़गढ़
- सम्पत प्रकाश पारीक व अ रा सी उ मा वि छापर जिला चूरू
- नीरू कुमारी C/o विनोद कुमार 1 द 18 जवाहर नगर जयपुर

- जगदीश प्रसाद सैनी प्र अ रा मा वि प्रीतमपुरी जिला सीकर
- मजु अरुण C/o अरुण कुमार गुप्ता, 2 ट 17 अरावली विहार अलवर
- कमर मेवाड़ी चादपोल काकरोली–313324
- महेन्द्र सिंह पूनिया रा मा वि मन्नीवाली वाया सादुल शहर श्रीगगानगर
- पारसचन्द जैन मु पा कुशायतना वाया सावर जिला - अजमेर
- रमेश चन्द्र बैरागी मु पो आँवली कला जिला झालावाड़
- जनकराज पारीक प्र अ ज्ञानज्योति सी उ मा वि श्रीकरनपुर
- भविष्य दत्त गुरुकुल के पीछे पगल्याजी रोड ऋषभदेव
- रूपा पारीक हिन्दुस्तान जिक लिमिटेड, टगस्टन परियोजना डेगाना–341503
- अनिल गगल केन्द्रीय विद्यालय, अलवर
- त्रिलोक गोयल अग्रसेन नगर, अजमेर
- सुनीता गेहलोत कोट का मोहल्ला, सोजत सिटी जिला पाली
- अविनाश चद्र 'चेतक' सेठ वशीधर जालान रा सी उ मा वि रतनगढ़, चूरू
- आनन्द एम वासु वासु स्ट्रीट, जैसलमेर–345001
- छीतर लाल साँखला मु पो टाकर वाड़ा, तह - दीगोद जिला - कोटा
- विनोद कुमार यादव म न टी - 8 वी रेलवे अस्पताल के पास हनुमानगढ़ ज –335512
- शिशुपाल सिंह । मु - नारसरा पो वाठीद वाया फतेहपुर शेखावटी जिला सीकर
- गगन विहारी दाधीच प्राध्यापक, ललितकला शिक्षक प्रशिक्षणालय जैसलमेर
- बृजमोहन रा उ प्रा वि निचला घण्टाला, बाँसवाड़ा
- जगदीश चन्द शर्मा प्राचार्य राज सी उ मा वि गिलूड जिला राजसमद
- रामेश्वर दयाल श्रीमाली जिला शिक्षा एव प्रशिक्षण सस्थान, जालौर
- सुशील व्यास नव चौकिया जोधपुर
- सगीर 'शाद' जामा मस्जिद छबड़ा जिला - बारा
- प्रकाश तातेड़ नवगीत नई आबादी काकरोली–313324
- प्रतिभा सेन मु पो झड़ोल वाया कोशियल जिला - भीलवाड़ा
- नारायण कृष्ण सुथर की घाटी उदयपुर
- हरि ओम कुमार शर्मा मु पो रसीदपुर वाया महवा सवाईमाधोपुर

- गिरवर प्रसाद बिस्सा लखौटियो का चौक, बीकानेर
- नवनीतराय रुचिर निवास सोजत नगर, जिला पाली–306104
- चचल कोठारी व्याख्याता रा सी उ मा वि राजसमन्द
- हरीश कुमार शर्मा बी 2/11 गौशाला, साहूनगर, सवाईमाधोपुर
- गोपाल प्रसाद मुद्गल पाण्डेय मोहल्ला, डीग (भरतपुर)
- शिवसिंह 'सुमन' उपप्रधानाचार्य रा सी उ मा वि रानी, पाली–306115
- सीताराम व्यास सदर बाजार बाड़मेर
- दीपचन्द सुथार रा मा वि मेड़ता शहर (नागौर)
- रामनिवास सोनी राम निकेतन, झँवर गली डीडवाना (नागौर)
- हनुमान दीक्षित दीक्षित निवास रानी बाजार नोहर–335523
- जितेन्द्र व्याख्याता श्री जैन सी उ मा वि छोटी सादड़ी–312604
- जगदीश सुदामा भट्टियानी चौहट्टा उदयपुर
- किशोर 'करुण' कार्यालय जि शि अ (प्रा शि) बाड़मेर
- लोकेश झा रा बा महारानी उ मा वि , बीकानेर
- जगदीश जोशी राज सी उ मा वि कपासन जिला - चित्तौड़गढ़
- राजकमल खटाना मु पो पींख जिला झुंझुनू
- दिनेश चद्र श्रीमाल रा महा सी उ मा वि डूँगरपुर
- रामसुख व्यास जिला शिक्षा एव प्रशिक्षण सस्थान बीकानेर
- डूँगर सिंह राजपुरोहित मु पो बावड़ी कला वाया फलौदी, जोधपुर
- भोगीलाल पाटीदार रा सी उ मा वि सीमलवाड़ा (डूँगरपुर)
- अनवर अली वार्ड न 8 चौमहला जिला झालावाड़–326515
- अरविन्द 'चुरूवी' बिरला घण्टाघर के पास, चूरू
- राजेन्द्र कविराज 17 करणीकृपा 5 - पावटा-सी रोड़ जोधपुर
- रमेश भारद्वाज प्रअ डिफेंस पब्लिक स्कूल शायरओली, नसीराबाद
- भगवती लाल शर्मा प्र अ रा उ प्रा वि कश्मोर दि गैंड़गढ़
- हरिश चन्द्र उपाध्याय
- भागीरथ भार्गव 88 आर्यनगर अलवर
- रविदत्त पालीवाल सामयिकी शेखावटी 55 मितर चाक नवलगढ़
- मगनचन्द्र दवे रा मा वि दुजाना जिला - पाली

- स्वर्णकान्ता मड़ूला 98 वल्लभ बाड़ी, कोटा
- मीठालाल खत्री रा मा वि रायपुरिया, जिला जालोर
- गुलाम मोहम्मद रा मा वि सोमणा जि नागौर
- बृजमोहन द्विवेदी प्रधानाध्यापक, रा मा वि , महरिया जि लालसोट
- शारदा शर्मा अध्यापिका, राज विद्यालय, श्रीगंगानगर
- रूपसिंह राठौर द्वारा विनय कुटीर, खारिया पो वा घासीराम जि झुंझुनू
- सीताराम व्यास व लि कार्यालय जि शि अ (छात्रा) बाड़मेर

❒